CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2024 with Solution PDF-Set 2/5/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. तकनीक की हर नई छलांग उत्साह भी पैदा करती है और चिंता भी लाती है। 'डीपमाइंड' और 'ओपनएआई' जैसी कंपनियों द्वारा बनाए गए नए स्मार्ट चैटबॉट्स ने लोगों का मन मोह लिया है। इनमें इंसानों की तरह सवालों के जवाब देने की क्षमता है। ये बारीकियों की व्याख्या कर सकते हैं, साथ ही, तथ्यों को विश्वास के साथ साझा भी कर सकते हैं। ये चैटबॉट नए नहीं हैं। इंसानों के संवाद करने में सक्षम कंप्यूटर प्रोग्राम या चैटबॉट्स की अवधारणा का 1950 के दशक से ही एक इतिहास रहा है। शुरुआती चैटबॉट्स में से एक एलिजा है, जिसे 1960 के दशक में कंप्यूटर वैज्ञानिक जोसेफ वीजेनबाम ने प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी का परीक्षण करने के लिए बनाया था। यह कीवर्ड और वाक्यांशों का जवाब देकर सहज ढंग से संवाद कर सकता था। चैटजीपीटी को अभी तक का सबसे उन्नत चैटबॉट माना जा रहा है।

चैटजीपीटी को ओपनएआई द्वारा विकसित किया गया है। यह भाषा का एक मॉडल है, जो इंसानों की तरह ही प्रतिक्रिया करता है। कुछ चैटबॉट ज्यादा जटिल संवाद करने में भी सक्षम होते हैं और समय के साथ अपनी प्रतिक्रियाओं को बेहतर बनाने के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करते हैं। अभी चैटजीपीटी सहित अधिकांश चैटबॉट्स अपने लिए सूचनाएँ एक विशाल, लेकिन एक सीमित दायरे से ही प्राप्त करते हैं। जैसे चैटजीपीटी का ताजा संस्करण 2021 के अंत तक संचित हुई सूचनाओं तक सीमित है। चैटबॉट अपनी प्रतिक्रिया में कहीं अधिक मुखर हैं और किसी जिज्ञासा पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करते हैं जबकि ऐसा करना गूगल या बिंग के लिए मुश्किल है। हालाँकि, चैटजीपीटी की इंसानों जैसी प्रतिक्रिया में सूचना स्रोत का जिक्र नहीं होता और न ही कोई लिंक या उद्धरण दिया जाता है। इसके साथ आसान बातचीत ने दुनियाभर में धूम मचा दी है। उत्साही लोग तरह-तरह के सवाल पूछ रहे हैं। हर संवाद के साथ चैटबॉट का भी परीक्षण और प्रशिक्षण चल रहा है।

फिर भी एक चैटबॉट सब कुछ नहीं जानता, जबकि इसका इजहार या इसकी अभिव्यक्ति या लेखन इंसानों की तरह ही है। इसकी जानकारी गलत और दोषपूर्ण भी हो सकती है। इनको अभी भी कई बाधाओं या हदों को पार करना है, सूचनाओं को बढ़ाना है। कई भाषाओं के विकल्पों के साथ डिजिटल संचार पाठ से आवाज की ओर बढ़ रहा है। हर शब्द स्वरबद्ध होता जा रहा है। एलेक्सा जैसे सर्च इंजन और आवाज आधारित अन्य सहायकों से आगे जाने के लिए चैटबॉट्स को ज्यादा सूचनाओं की जरूरत पड़ेगी। लोगों की जिज्ञासाओं को शब्दों से ही नहीं स-स्वर शांत करना होगा।

स्पैरो चैटबॉट जीपीटी की तुलना में कुछ बेहतर है। जल्द ही गलत सवालों को पहचानने वाले चैटबॉट भी आ जाएँगे। अगर समझदारी से इस्तेमाल हुआ, तो चैटबॉट हमारे बहुत काम आएँगे। [10 अंक]

1(i). चैटबॉट्स से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) स्कूल में बच्चों को पढ़ाने वाली रोबोटिक मशीन

(B) अंतरिक्ष में छिपे रहस्यों का पता लगाने वाली मशीन

(C) ऐसी रोबोटिक मशीन जिससे मनुष्य बात कर सके

(D) ऐसी रोबोटिक मशीन जो मनुष्य का काम कर सके

सही उत्तर: (C) ऐसी रोबोटिक मशीन जिससे मनुष्य बात कर सके

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के स्पष्ट कथन और प्रश्न में माँगी गई विशेष जानकारी है।
- निकट दिखने वाले विकल्पों में उद्देश्य, क्षमता, कारण और परिणाम का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत गद्यांश में चैटबॉट्स को इंसानों से संवाद करने में सक्षम कंप्यूटर प्रोग्राम कहा गया है। उनकी प्रमुख पहचान मनुष्य के प्रश्नों पर भाषा में प्रतिक्रिया देना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विद्यालय में पढ़ाने और अंतरिक्ष के रहस्य खोजने की भूमिकाएँ क्रमशः (A) तथा (B) में हैं, पर गद्यांश इन्हें चैटबॉट की परिभाषा नहीं बताता। विकल्प (D) में किसी भी मानवीय काम को करने की बहुत व्यापक बात है; इसमें संवाद का आवश्यक गुण नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष ऐसी रोबोटिक मशीन जिससे मनुष्य बात कर सके। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की उसी बात से प्रत्येक विकल्प का मिलान करें।

1(ii). चैटबॉट्स द्वारा लोगों का मन मोहने का कारण इनमें से नहीं है : [1 अंक]

(A) इंसानों से संवाद करना।

(B) विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी जानकारी प्रदान करना।

(C) तथ्यों को विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत करना।

(D) सूचना के स्रोतों की जानकारी प्रदान करना।

सही उत्तर: (D) सूचना के स्रोतों की जानकारी प्रदान करना।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के स्पष्ट कथन और प्रश्न में माँगी गई विशेष जानकारी है।
- निकट दिखने वाले विकल्पों में उद्देश्य, क्षमता, कारण और परिणाम का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत प्रश्न में कारण नहीं होने वाला विकल्प चुनना है। गद्यांश स्पष्ट कहता है कि चैटजीपीटी की इंसानों जैसी प्रतिक्रिया में सूचना स्रोत का जिक्र नहीं होता और कोई लिंक या उद्धरण भी नहीं दिया जाता।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) का संवाद, (B) की विभिन्न जानकारियाँ और (C) की विश्वास के साथ तथ्य प्रस्तुत करने की क्षमता गद्यांश में बताए आकर्षण हैं। यहाँ विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुति का अर्थ आत्मविश्वासपूर्ण कथन है, हर तथ्य का निश्चित रूप से सही होना नहीं। इसलिए ये तीनों माँगे गए निषेधात्मक उत्तर नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सूचना के स्रोतों की जानकारी प्रदान करना। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की उसी बात से प्रत्येक विकल्प का मिलान करें।

1(iii). गूगल या बिंग की तुलना में चैटबॉट्स के अधिक प्रभावशाली होने का कारण है – [1 अंक]

(A) उपयोगकर्ता के साथ सहज ढंग से संवाद करना।

(B) प्रतिक्रिया में मुखर होना और जिज्ञासा पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करना।

(C) छात्रों द्वारा अपना होमवर्क करने या निबंध लिखने में इसका प्रयोग करना।

(D) अपनी बात के समर्थन में सूचना स्रोत का उल्लेख करना।

सही उत्तर: (B) प्रतिक्रिया में मुखर होना और जिज्ञासा पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करना।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के स्पष्ट कथन और प्रश्न में माँगी गई विशेष जानकारी है।
- निकट दिखने वाले विकल्पों में उद्देश्य, क्षमता, कारण और परिणाम का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत गद्यांश में सीधी तुलना है कि चैटबॉट अपनी प्रतिक्रिया में अधिक मुखर होते हैं और किसी जिज्ञासा पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि गूगल या बिंग के लिए ऐसा करना मुश्किल है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) में सहज संवाद चैटबॉट की सामान्य विशेषता है, पर तुलना का स्पष्ट आधार नहीं। (C) में होमवर्क और निबंध का उपयोग इस गद्यांश में नहीं बताया गया। (D) के विपरीत गद्यांश सूचना स्रोत का उल्लेख न होने की बात कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रतिक्रिया में मुखर होना और जिज्ञासा पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करना। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की उसी बात से प्रत्येक विकल्प का मिलान करें।

1(iv). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(I) चैटबॉट्स जटिल संवाद करने में सक्षम हैं।

(II) चैटबॉट्स का विकास मानव जीवन के एकाकीपन को दूर करने में सक्षम है।

(III) चैटबॉट्स मानव द्वारा पूछे गए सवालों का जवाब अपने विवेक के आधार पर देता है।

(IV) भविष्य में चैटबॉट्स सही गलत को पहचानने में सक्षम होंगे।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल कथन (I) सही है।

(B) केवल कथन (III) सही है।

(C) कथन (I) और (IV) सही हैं।

(D) कथन (II) और (III) सही हैं।

सही उत्तर: (C) कथन (I) और (IV) सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के स्पष्ट कथन और प्रश्न में माँगी गई विशेष जानकारी है।
- निकट दिखने वाले विकल्पों में उद्देश्य, क्षमता, कारण और परिणाम का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत गद्यांश के अनुसार कुछ चैटबॉट ज्यादा जटिल संवाद करने में सक्षम हैं, इसलिए कथन (I) सही है। अंत में जल्द गलत सवाल पहचानने वाले चैटबॉट आने की संभावना है; इसी संदर्भ में भविष्य की पहचान-क्षमता वाला कथन (IV) स्वीकार्य है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच एकाकीपन दूर करने की बात गद्यांश में नहीं है, इसलिए कथन (II) प्रमाणित नहीं है। कथन (III) भी अनुचित है क्योंकि उत्तर संचित सूचनाओं और भाषा के मॉडल पर आधारित हैं; मनुष्य जैसे स्वतंत्र विवेक का दावा नहीं है। (A) में सही कथन (IV) छूटता है, जबकि (B) और (D) में अप्रमाणित कथन हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कथन (I) और (IV) सही हैं। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की उसी बात से प्रत्येक विकल्प का मिलान करें।

1(ix). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : तकनीकी प्रगति उत्साह के साथ-साथ चिंता का कारण भी है।

कारण : यह जीवन को सरल बनाने के साथ जटिल बना रही है। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग जाँचने के बाद उनके व्याख्यात्मक संबंध का परीक्षण करना चाहिए।
- उत्तर तकनीक के लाभ और उससे जुड़ी सीमाओं के बारे में गद्यांश की समग्र दृष्टि पर आधारित है।

चरण 1: कथन की सत्यता आरंभिक पंक्ति कहती है कि तकनीक की हर नई छलांग उत्साह पैदा करती है और चिंता भी लाती है।

इसलिए तकनीकी प्रगति के दोहरे प्रभाव वाला कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता सहज संवाद और जिज्ञासाओं का उत्तर जीवन को सरल बनाने की संभावना दिखाते हैं। दूसरी ओर सीमित सूचनाएँ, गलत जानकारी तथा स्रोतों के अभाव से नई उलझनें पैदा होती हैं। जीवन सरल होने के साथ जटिल होने का कारण इसी अर्थ में सही है।

चरण 3: कारण और कथन का संबंध सुविधाएँ उत्साह जगाती हैं, जबकि गलत जानकारी और सीमाएँ चिंता उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार कारण कथन के दोनों पहलुओं को समझाता है। (A) और (B) एक सही अंश को गलत बताते हैं। (C) दोनों को सही मानता है, किंतु मौजूद व्याख्यात्मक संबंध को अस्वीकार करता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कथन-कारण में केवल दोनों का सही होना न देखें; जाँचें कि कारण कथन के दोनों पक्षों को कैसे समझाता है।

1(v). 'एक चैटबॉट सब कुछ नहीं जानता' – लेखक के इस कथन का कारण है – [1 अंक]

(A) चैटबॉट द्वारा कभी-कभी गलत और दोषपूर्ण जानकारी देना।

(B) चैटबॉट में संचित सूचनाओं का सीमित दायरे में होना।

(C) चैटबॉट का हर संवाद के साथ परीक्षण और प्रशिक्षण चलना।

(D) इंसानों जैसी प्रतिक्रिया में लिंक या उदाहरण न दे पाना।

सही उत्तर: (B) चैटबॉट में संचित सूचनाओं का सीमित दायरे में होना।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के स्पष्ट कथन और प्रश्न में माँगी गई विशेष जानकारी है।
- निकट दिखने वाले विकल्पों में उद्देश्य, क्षमता, कारण और परिणाम का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत लेखक बताता है कि अधिकांश चैटबॉट सूचनाएँ एक विशाल लेकिन सीमित दायरे से प्राप्त करते हैं। उदाहरण में चैटजीपीटी की जानकारी 2021 के अंत तक संचित सूचनाओं तक सीमित बताई गई है। इसी सीमा से सब कुछ न जानने का कारण स्पष्ट होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में गलत जानकारी की संभावना उसकी विश्वसनीयता की समस्या है, ज्ञान की सीमा का मूल कारण नहीं। (C) में परीक्षण और प्रशिक्षण सुधार की प्रक्रिया है। (D) में लिंक न देना स्रोत प्रस्तुत करने की सीमा है; उससे उपलब्ध ज्ञान का पूरा दायरा नहीं बताया जाता।

चरण 3: निष्कर्ष चैटबॉट में संचित सूचनाओं का सीमित दायरे में होना। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की उसी बात से प्रत्येक विकल्प का मिलान करें।

1(vi). सबसे प्राचीन चैटबॉट का नाम है – [1 अंक]

(A) एलेक्सा

(B) एलिजा

(C) स्पैरो

(D) चैटजीपीटी

सही उत्तर: (B) एलिजा

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के स्पष्ट कथन और प्रश्न में माँगी गई विशेष जानकारी है।
- निकट दिखने वाले विकल्पों में उद्देश्य, क्षमता, कारण और परिणाम का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत गद्यांश एलिजा को शुरुआती चैटबॉट्स में से एक बताता है। कंप्यूटर वैज्ञानिक जोसेफ वीजेनबाम ने इसे 1960 के दशक में प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी के परीक्षण के लिए बनाया था। दिए गए विकल्पों में प्राचीन नाम इसी आधार पर चुना जाएगा।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) एलेक्सा का उल्लेख आवाज आधारित सहायकों के प्रसंग में है। (C) स्पैरो का उल्लेख तुलनात्मक रूप से बेहतर नए चैटबॉट के रूप में है और (D) चैटजीपीटी को उन्नत चैटबॉट कहा गया है। इन तीनों को गद्यांश में एलिजा जैसा प्रारंभिक ऐतिहासिक स्थान नहीं दिया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष एलिजा। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की उसी बात से प्रत्येक विकल्प का मिलान करें।

1(vii). चैटबॉट्स की सबसे बड़ी कमी है – [1 अंक]

(A) गलत सवालों को पहचानने की क्षमता का न होना।

(B) सूचनाओं का सीमित भंडार में होना।

(C) स्रोतों का हवाला देने की क्षमता का न होना।

(D) जानकारी के दोषपूर्ण होने की संभावना का होना।

सही उत्तर: (D) जानकारी के दोषपूर्ण होने की संभावना का होना।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के स्पष्ट कथन और प्रश्न में माँगी गई विशेष जानकारी है।
- निकट दिखने वाले विकल्पों में उद्देश्य, क्षमता, कारण और परिणाम का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत गद्यांश चेतावनी देता है कि चैटबॉट की अभिव्यक्ति इंसानों जैसी होने पर भी उसकी जानकारी गलत और दोषपूर्ण हो सकती है। इससे उपयोगकर्ता किसी गलत उत्तर को सही मान सकता है। सूचना देने वाले साधन की उपयोगिता के लिए यह सबसे गंभीर कमी है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) गलत सवाल पहचान न पाना एक विशिष्ट सीमा है। (B) सीमित सूचना-भंडार ज्ञान का दायरा घटाता है और (C) स्रोत न बताना जाँच को कठिन बनाता है। ये सीमाएँ भी वर्णित हैं, पर गलत जानकारी देने की संभावना सीधे उत्तर की शुद्धता को प्रभावित करती है; इसलिए प्रश्न में सबसे बड़ी कमी के लिए (D) उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष जानकारी के दोषपूर्ण होने की संभावना का होना। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की उसी बात से प्रत्येक विकल्प का मिलान करें।

1(viii). एलिजा चैटबॉट की रचना की गई थी – [1 अंक]

(A) प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण हेतु

(B) मनुष्यों से संवाद करने हेतु

(C) मानवीय कार्यों में मदद करने हेतु

(D) सूचनाओं के भंडार-संकलन हेतु

सही उत्तर: (A) प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण हेतु

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश के स्पष्ट कथन और प्रश्न में माँगी गई विशेष जानकारी है।
- निकट दिखने वाले विकल्पों में उद्देश्य, क्षमता, कारण और परिणाम का अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का निर्णायक संकेत गद्यांश में एलिजा के निर्माण का उद्देश्य प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी का परीक्षण बताया गया है। विकल्प (A) इसी स्पष्ट उद्देश्य से मेल खाता है। प्रश्न निर्माण के प्रयोजन का है, केवल उसकी कार्यक्षमता का नहीं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) में मनुष्यों से संवाद उसकी क्षमता है; गद्यांश बताता है कि वह कीवर्ड और वाक्यांशों का जवाब देकर संवाद करता था। इसे निर्माण के बताए परीक्षण-उद्देश्य का विकल्प नहीं बनाना चाहिए। (C) मानवीय कामों में मदद और (D) सूचना-संकलन को एलिजा के निर्माण का उद्देश्य नहीं कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण हेतु। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर गद्यांश की उसी बात से प्रत्येक विकल्प का मिलान करें।

1(x). 'डिजिटल दुनिया पाठ से आवाज की ओर बढ़ रही है' – पंक्ति से अभिप्राय है – [1 अंक]

(A) लिखित शब्दों का महत्त्व कम हो रहा है।

(B) इस दुनिया में स्वरबद्ध शब्दों का महत्त्व बढ़ रहा है।

(C) यह दुनिया केवल स-स्वर शब्दों से जुड़ रही है।

(D) यह दुनिया लिखित छोड़ केवल मौखिक की ओर बढ़ रही है।

सही उत्तर: (B) इस दुनिया में स्वरबद्ध शब्दों का महत्त्व बढ़ रहा है।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्रीय कथन और उसके संदर्भ को पहचानकर उपयुक्त विकल्प चुनना आवश्यक है।
- विकल्पों में अर्थ के विस्तार, अधूरी सूचना और मूल आशय के बीच अंतर करना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें गद्यांश में पाठ से आवाज की ओर बढ़ने के तुरंत बाद कहा गया है कि हर शब्द स्वरबद्ध होता जा रहा है। एलेक्सा और आवाज आधारित सहायकों का उल्लेख भी इसी परिवर्तन को स्पष्ट करता है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें लेखक के अनुसार लोगों की जिज्ञासाएँ शब्दों से ही नहीं, सस्वर भी शांत करनी होंगी। इसलिए आवाज में सुनने और संवाद करने की सुविधा का महत्त्व बढ़ रहा है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) लिखित शब्दों का महत्त्व घटने की बात नहीं कही गई है। (C) और (D) में केवल आवाज अथवा केवल मौखिक संचार का दावा है, जबकि पाठ के पूरी तरह समाप्त होने का संकेत नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष इस दुनिया में स्वरबद्ध शब्दों का महत्त्व बढ़ रहा है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: किसी प्रवृत्ति में वृद्धि का अर्थ दूसरे माध्यम का पूर्ण अंत नहीं होता; केवल जैसे शब्दों को मूल पाठ से जाँचें।

2. शब्द तो आए बहुत बाद में
संख्याएँ हमारे साथ जन्म से ही हैं
गर्भ में जब
निर्माण हो रहा था हमारी हड्डियों का
रक्तकणों और कोशिकाओं का
साथ-साथ संख्याएँ भी निर्मित होती जा रही थीं
एक हमारी देह की इकाई की वो संख्या है
जिसमें समाहित हैं सारी संख्याएँ
दो आँखों में स्थित है दो
तीन है उँगलियों के तीन जड़ों में,
हृदय के हिस्से हैं चार
और पाँच का निवास
पाँच उँगलियों में है
आगे की सारी संख्याओं को
देह में तलाशना बहुत मज़ेदार खेल है
नौ को तो अमर कर गए कबीर
कि नौ द्वारे का पिंजरा ता में पंछी पौन.....
मुझे तो बहुत चकित करती है यह बात
कि देह की संख्याएँ आठ की संख्या निर्धारित करती है
क्योंकि आठ तरह से ही मुड़ती है यह देह
इसीलिए तो कृष्ण कहलाते हैं अष्टावक्र
सात रंग दिखते हैं आँखों को
और जीभ छह तरह के स्वादों को पहचानती है
इसीलिए तो भोजन को कहा गया षट्रस
देखिए एक से बना कैसा प्यारा शब्द
एका
एक जो दूसरे के बिना रह नहीं सकता
जिसके बिना संभव नहीं थी
इस दुनिया की शुरुआत
मैंने तो शुरू में ही कही थी यह बात
कि संख्याएँ शब्दों की पूर्वज हैं
शब्द तो आए बहुत बाद में
और आते ही चले जा रहे हैं
जबकि संख्याएँ सबकी सब आ चुकी हैं
क्या कोई नई संख्या बता सकते हैं आप। [5 अंक]

2(i). पद्यांश के आधार पर संख्याओं की क्या विशेषता है ? [1 अंक]

(A) हमारी देह का निर्माण संख्या के आधार पर हुआ है।

(B) संख्याओं का जन्म हमारे साथ ही हुआ है।

(C) संख्याओं का जन्म मनुष्य से पूर्व हुआ है।

(D) पूरे विश्व में संख्याएँ एक समान लिखी जाती हैं।

सही उत्तर: (B) संख्याओं का जन्म हमारे साथ ही हुआ है।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्रीय कथन और उसके संदर्भ को पहचानकर उपयुक्त विकल्प चुनना आवश्यक है।
- विकल्पों में अर्थ के विस्तार, अधूरी सूचना और मूल आशय के बीच अंतर करना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें पद्यांश की आरंभिक पंक्ति है कि संख्याएँ हमारे साथ जन्म से ही हैं। गर्भ में हड्डियों, रक्तकणों और कोशिकाओं के निर्माण के साथ संख्याओं के निर्मित होने की बात इसे स्पष्ट करती है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें कवि संख्याओं को देह से जोड़ता है और आँखों, उँगलियों तथा हृदय के हिस्सों में उनका रूप देखता है। अतः संख्याओं का हमारे साथ जन्म होना ही यहाँ बताई गई विशेषता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) में देह का निर्माण संख्याओं के आधार पर होने का कारण संबंध जोड़ा गया है। (C) मनुष्य से पहले जन्म की बात करता है और (D) विश्व में समान लेखन की; ये दोनों बातें पद्यांश में नहीं हैं।

चरण 4: निष्कर्ष संख्याओं का जन्म हमारे साथ ही हुआ है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पद्यांश की स्पष्ट आरंभिक घोषणा को आधार बनाएँ; शरीर में संख्या दिखने और संख्या से शरीर बनने में अंतर रखें।

2(ii). 'एक हमारी देह की इकाई की वो संख्या है जिसमें समाहित हैं सारी संख्याएँ' – का अर्थ है : [1 अंक]

(A) एक ही परम पिता में संपूर्ण ब्रह्मांड समाहित है।

(B) शरीर संख्याओं के योग से बना है।

(C) सारे अंगों का पोषण शरीर से होता है।

(D) हमारे शरीर में सारी संख्याएँ समाई हुई हैं।

सही उत्तर: (D) हमारे शरीर में सारी संख्याएँ समाई हुई हैं।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्रीय कथन और उसके संदर्भ को पहचानकर उपयुक्त विकल्प चुनना आवश्यक है।
- विकल्पों में अर्थ के विस्तार, अधूरी सूचना और मूल आशय के बीच अंतर करना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें कवि एक देह को एक इकाई कहता है और उसी में सारी संख्याओं के समाहित होने की कल्पना करता है। अगली पंक्तियों में दो आँखें, उँगलियों की तीन जड़ें तथा हृदय के चार हिस्से उदाहरण हैं।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें ये उदाहरण बताते हैं कि अलग-अलग संख्याएँ शरीर के अलग-अलग अंगों में खोजी जा सकती हैं। एक शरीर अनेक संख्याओं का समावेश करता है, यही उद्धृत पंक्तियों का आशय है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) का परम पिता और ब्रह्मांड वाला आध्यात्मिक अर्थ यहाँ नहीं दिया गया है। (B) संख्याओं के योग से शरीर बनने की बात करता है। (C) अंगों के पोषण की चर्चा करता है, जिसका पंक्तियों से संबंध नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष हमारे शरीर में सारी संख्याएँ समाई हुई हैं। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: किसी पंक्ति का भावार्थ चुनते समय उसके बाद दिए उदाहरणों को जोड़ें; आँखों और उँगलियों में संख्याएँ खोजी गई हैं।

2(iii). कवि को कौन-सी बात आश्चर्यचकित करती है ? [1 अंक]

(A) श्रीकृष्ण को अष्टावक्र क्यों कहते हैं ?

(B) देह आठ तरह से क्यों मुड़ती है ?

(C) देह की संख्याएँ आठ की संख्या कैसे निर्धारित करती है ?

(D) संख्या और देह का परस्पर क्या संबंध है ?

सही उत्तर: (C) देह की संख्याएँ आठ की संख्या कैसे निर्धारित करती है ?

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्रीय कथन और उसके संदर्भ को पहचानकर उपयुक्त विकल्प चुनना आवश्यक है।
- विकल्पों में अर्थ के विस्तार, अधूरी सूचना और मूल आशय के बीच अंतर करना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें पद्यांश में कवि सीधे कहता है कि उसे यह बात बहुत चकित करती है कि देह की संख्याएँ आठ की संख्या निर्धारित करती हैं। इसके बाद देह के आठ तरह से मुड़ने का उल्लेख आता है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें प्रश्न कवि को आश्चर्यचकित करने वाली बात पूछता है। इसलिए उत्तर उसी स्पष्ट कथन से मिलेगा, जिसमें देह की संख्याओं और आठ की संख्या के निर्धारण का संबंध व्यक्त है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) में कृष्ण के नामकरण का प्रश्न है, जो आगे का उल्लेख है। (B) केवल मुड़ने का कारण पूछता है, कवि का पूरा आश्चर्य नहीं बताता। (D) संख्या और देह के सामान्य संबंध तक सीमित है।

चरण 4: निष्कर्ष देह की संख्याएँ आठ की संख्या कैसे निर्धारित करती हैं, यह बात कवि को आश्चर्यचकित करती है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: चकित या आश्चर्य जैसे संकेत शब्द के तुरंत बाद की पंक्तियाँ पढ़ें; प्रश्न का सटीक उत्तर अक्सर वहीं मिलता है।

2(iv). 'नौ द्वारे का पिंजरा ता में पंछी पौन' – पंक्ति के संदर्भ में 'पिंजरा' शब्द से आशय है – [1 अंक]

(A) जीवन

(B) संसार

(C) आत्मा

(D) शरीर

सही उत्तर: (D) शरीर

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्रीय कथन और उसके संदर्भ को पहचानकर उपयुक्त विकल्प चुनना आवश्यक है।
- विकल्पों में अर्थ के विस्तार, अधूरी सूचना और मूल आशय के बीच अंतर करना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें कवि देह में संख्याओं की तलाश करते हुए कबीर की नौ द्वार वाले पिंजरे की पंक्ति देता है। यहाँ पिंजरा उस देह का रूपक है जिसमें प्राण या जीव का निवास माना जाता है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें दो आँखें, दो कान, दो नासाछिद्र, एक मुख तथा मल और मूत्र के दो द्वार मिलकर नौ द्वार होते हैं। यह संकेत मनुष्य के शरीर से मेल खाता है और पिंजरे का आशय स्पष्ट करता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) जीवन अमूर्त अवस्था है और (B) संसार व्यापक बाहरी जगत है। (C) आत्मा पिंजरे में रहने वाले पक्षी के भाव से जुड़ती है, पिंजरे से नहीं। इसीलिए इन तीनों को पिंजरे का अर्थ नहीं माना जा सकता।

चरण 4: निष्कर्ष पिंजरा शब्द से आशय शरीर है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक पहचानते समय उसके साथ आया विशेषण देखें; नौ द्वार शरीर की पहचान कराते हैं, आत्मा की नहीं।

2(v). संख्याओं को शब्दों का पूर्वज क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) मनुष्य के साथ जन्म होने के कारण

(B) शब्दों को जन्म देने के कारण

(C) संख्याओं का जन्म शब्दों से पहले होने के कारण

(D) सभी संख्याओं का जन्म हो चुकने के कारण

सही उत्तर: (C) संख्याओं का जन्म शब्दों से पहले होने के कारण

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्रीय कथन और उसके संदर्भ को पहचानकर उपयुक्त विकल्प चुनना आवश्यक है।
- विकल्पों में अर्थ के विस्तार, अधूरी सूचना और मूल आशय के बीच अंतर करना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें कवि कहता है कि संख्याएँ शब्दों की पूर्वज हैं और तुरंत स्पष्ट करता है कि शब्द बहुत बाद में आए। यहाँ पूर्वज होने का आधार अस्तित्व में आने का क्रम है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें संख्याओं को पहले से उपस्थित और शब्दों को बाद में विकसित बताया गया है। इस तरह पूर्वज शब्द संख्याओं की शब्दों से प्राचीनता को प्रकट करता है, न कि शब्दों को जन्म देने की कोई शाब्दिक प्रक्रिया।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) मनुष्य के साथ जन्म का उल्लेख करता है, लेकिन शब्दों से तुलना का कारण नहीं बताता। (B) शब्दों को जन्म देने का दावा करता है। (D) सभी संख्याएँ आ चुकने का तथ्य देता है, जबकि पूर्वज कहलाने का सीधा कारण पहले आना है।

चरण 4: निष्कर्ष संख्याओं का जन्म शब्दों से पहले होने के कारण उन्हें शब्दों का पूर्वज कहा गया है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पूर्वज का अर्थ पहले आने वाला समझें और तुलना के दोनों पक्षों का क्रम पहचानें; उत्तर उसी क्रम में छिपा है।

3(i). प्रो. गुप्ता की लेखन में विशेष रुचि है, कॉलेज की पत्रिका के लिए वह लेख लिखते हैं। अब वह समाचार-पत्रों में अपना हाथ माँजना चाहते हैं। उन्हें किस शीर्षक के अंतर्गत अपने लेख भेजने चाहिए ? [1 अंक]

(A) संपादक के नाम पत्र

(B) संपादकीय

(C) स्तंभ लेखन

(D) प्रतिवेदन

सही उत्तर: (A) संपादक के नाम पत्र

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्रीय कथन और उसके संदर्भ को पहचानकर उपयुक्त विकल्प चुनना आवश्यक है।
- विकल्पों में अर्थ के विस्तार, अधूरी सूचना और मूल आशय के बीच अंतर करना चाहिए।

चरण 1: लेखन के उद्देश्य को पहचानें प्रश्न में प्रो. गुप्ता की लेखन में रुचि और कॉलेज पत्रिका का अनुभव बताया गया है। समाचारपत्र में अपना हाथ माँजने का अर्थ है वहाँ के पाठक वर्ग और अपेक्षाओं के अनुसार लेखन का अभ्यास करना तथा अपनी अभिव्यक्ति निखारना।

चरण 2: प्रारंभिक मंच चुनें संपादक के नाम पत्र समाचारपत्र में पाठकों को अपनी राय, प्रतिक्रिया, समस्या और सुझाव रखने का सरल अवसर देते हैं। सीमित आकार में स्पष्ट तथा प्रभावी बात कहने के अभ्यास के लिए यह उपयुक्त मंच है। इसलिए समाचारपत्र में हाथ माँजने के उद्देश्य से उन्हें इसी शीर्षक के अंतर्गत रचनाएँ भेजनी चाहिए।

चरण 3: अन्य विकल्पों से भेद करें (B) संपादकीय समाचारपत्र की संस्थागत नीति और राय व्यक्त करता है। (C) स्तंभ लेखन में स्थापित लेखक का नियमित विशिष्ट लेखन होता है; यहाँ बल समाचारपत्र में प्रारंभिक अभ्यास पर है। (D) प्रतिवेदन किसी घटना या गतिविधि का तथ्यात्मक विवरण है, सामान्य लेखकीय अभ्यास का यह मंच नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रो. गुप्ता को संपादक के नाम पत्र के अंतर्गत लिखकर समाचारपत्र में अपना हाथ माँजना चाहिए। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: हाथ माँजना जैसे उद्देश्यसूचक पद को पहचानें; समाचारपत्र में लेखन का प्रारंभिक अभ्यास संपादक के नाम पत्र से जोड़ा जाता है।

3(ii). जनसंचार के अन्य माध्यमों की तुलना में इंटरनेट पत्रकारिता के तेजी से लोकप्रिय होने के कारण हैं – [1 अंक]

(A) पढ़ने, सुनने और देखने की सुविधा का मिलना।

(B) खबरों का तीव्र गति से पहुँचना।

(C) सूचनाओं के विशाल भंडार का होना।

(D) खबरों के संप्रेषण और पुष्टि के लिए बैकग्राउंड तैयार कराने में सहायक होना।

सही उत्तर: (A) पढ़ने, सुनने और देखने की सुविधा का मिलना।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के केंद्रीय कथन और उसके संदर्भ को पहचानकर उपयुक्त विकल्प चुनना आवश्यक है।
- विकल्पों में अर्थ के विस्तार, अधूरी सूचना और मूल आशय के बीच अंतर करना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें इंटरनेट एक ही मंच पर लिखित सामग्री, ध्वनि और दृश्य उपलब्ध कराता है। उपयोगकर्ता खबर पढ़ भी सकता है, सुन भी सकता है और उससे जुड़ा वीडियो देख भी सकता है। यही इसकी विशिष्ट बहुमाध्यमीय सुविधा है।

चरण 2: आशय स्पष्ट करें अन्य जनसंचार माध्यमों की तुलना में तेजी से लोकप्रिय होने का सबसे समग्र कारण इन तीनों अनुभवों का साथ मिलना है। मुद्रित समाचार मुख्यतः पढ़े जाते हैं और रेडियो मुख्यतः सुना जाता है; इंटरनेट सुविधाओं को एकत्र करता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (B) तीव्रता और (C) विशाल भंडार इंटरनेट की उपयोगी खूबियाँ हैं, लेकिन उसकी संयुक्त माध्यम क्षमता का पूरा परिचय नहीं देतीं। (D) पत्रकार के समाचार तैयार करने में सहायता से जुड़ा है, आम उपयोगकर्ता के पढ़ने, सुनने और देखने के एकीकृत अनुभव से नहीं।

चरण 4: निष्कर्ष पढ़ने, सुनने और देखने की सुविधा का मिलना इंटरनेट पत्रकारिता की लोकप्रियता का प्रमुख कारण है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: अन्य माध्यमों से तुलना वाले प्रश्न में वह विशेषता चुनें जो कई माध्यमों की सुविधाएँ एक साथ देती हो।

3(iii). पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए पत्रकारों द्वारा अपनाए जाने वाले विभिन्न रूप कहलाते हैं – [1 अंक]

(A) समाचार लेखन

(B) विचारपरक लेखन

(C) साहित्यिक लेखन

(D) पत्रकारीय लेखन

सही उत्तर: (D) पत्रकारीय लेखन

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों द्वारा सूचना, विचार और घटनाओं को पाठकों, दर्शकों तथा श्रोताओं तक पहुँचाने के लिए अपनाए गए विभिन्न लेखन रूपों का व्यापक नाम पत्रकारीय लेखन है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के केंद्रीय शब्द और दिए गए संदर्भ का आपस में मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: व्यापक पद पहचानें प्रश्न केवल समाचार की रचना नहीं, संचार के अलग-अलग माध्यमों और लेखन रूपों का समग्र नाम पूछता है। समाचार, आलेख, साक्षात्कार और फीचर इसी व्यापक क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। इसलिए उत्तर में ऐसा पद चाहिए जो इन सभी को समाहित करता हो।

चरण 2: अन्य विकल्पों की सीमा समझें (A) समाचार लेखन केवल घटनाओं की सूचना देने वाला एक रूप है। (B) विचारपरक लेखन में विचार और विश्लेषण की प्रधानता है। (C) साहित्यिक लेखन का मुख्य संबंध साहित्य-सृजन से है। ये तीनों प्रश्न में बताए समस्त पत्रकारीय रूपों का सामूहिक नाम नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — पत्रकारीय लेखन।

त्वरित सुझाव: विभिन्न पत्रकारिता रूपों का साझा नाम पूछा जाए तो व्यापक श्रेणी चुनें।

3(iv). साक्षात्कार को किस रूप में लिखा जा सकता है ? [1 अंक]

(A) सवाल जवाब के रूप में

(B) आलेख के रूप में

(C) और (B) दोनों रूप में

(D) और (B) दोनों रूपों में से कोई नहीं

सही उत्तर: (C) और (B) दोनों रूप में

हल:

अवधारणा:

- साक्षात्कार किसी व्यक्ति से बातचीत के आधार पर तैयार किया जाता है। उसे मूल सवाल-जवाब के क्रम में या सामग्री को व्यवस्थित करके आलेख के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के केंद्रीय शब्द और दिए गए संदर्भ का आपस में मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: दोनों प्रस्तुति शैलियाँ समझें सवाल-जवाब शैली में प्रश्न और उनके उत्तर अलग-अलग दिए जाते हैं। आलेख शैली में बातचीत से मिली सूचनाओं, विचारों और व्यक्तित्व के पहलुओं को क्रमबद्ध विवरण में पिरोया जाता है। दोनों में सामग्री का आधार वही बातचीत रहती है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) और (B) अपने-अपने स्तर पर सही हैं, पर कोई एक रूप ही एकमात्र स्वीकार्य रूप नहीं है। (C) दोनों रूपों को स्वीकार करता है, इसलिए पूर्ण उत्तर है। (D) दोनों रूपों को अस्वीकार करता है, जबकि दोनों पत्रकारिता में प्रयुक्त होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — सवाल-जवाब और आलेख, दोनों रूपों में साक्षात्कार लिखा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: साक्षात्कार की सामग्री और उसके प्रस्तुति रूप का अंतर याद रखें।

3(v). पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-माना रूप क्या होता है ? [1 अंक]

(A) फीचर

(B) समाचार

(C) स्तंभ

(D) आलेख

सही उत्तर: (B) समाचार

हल:

अवधारणा:

- समाचार पत्रकारिता का सर्वाधिक जाना-माना रूप है। इसका मुख्य काम समसामयिक और महत्त्वपूर्ण घटनाओं की तथ्यपरक सूचना लोगों तक पहुँचाना है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के केंद्रीय शब्द और दिए गए संदर्भ का आपस में मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रश्न का संकेत पहचानें यह प्रश्न सबसे परिचित पत्रकारीय रूप पूछता है। समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन और अन्य समाचार माध्यमों में घटनाओं की जानकारी नियमित रूप से समाचार के रूप में दी जाती है। इसी कारण जनसामान्य पत्रकारिता को सबसे पहले समाचार से जोड़ता है।

चरण 2: अन्य रूपों से अंतर करें (A) फीचर किसी विषय का रोचक और विस्तृत विवेचन करता है। (C) स्तंभ नियमित स्थान पर प्रकाशित विशिष्ट लेखन है। (D) आलेख में किसी विषय का विवेचन या विश्लेषण मिलता है। ये महत्त्वपूर्ण रूप हैं, किंतु सबसे जाना-माना रूप पूछने पर समाचार उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — समाचार।

त्वरित सुझाव: सबसे जाना-माना पत्रकारीय रूप पूछे जाने पर घटनाओं की सूचना देने वाला रूप पहचानें।

---

4. हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना।।
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई।।
हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता।।
कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा।।
यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ।।
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा।। [5 अंक]

4(i). राम ने हनुमान के प्रति कृतज्ञता क्यों प्रकट की ? [1 अंक]

(A) सीता का पता लगाने के कारण
(B) समय पर संजीवनी बूटी लाने के कारण
(C) अपने स्वभाव की विनम्रता के कारण
(D) वैद्य को लंका से लाने के कारण

सही उत्तर: (B) समय पर संजीवनी बूटी लाने के कारण

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में हनुमान के प्रयास से उपचार संभव होता है और लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर होती है। राम की कृतज्ञता का तत्काल कारण इसी संकट से मुक्ति दिलाने वाली सेवा है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के केंद्रीय शब्द और दिए गए संदर्भ का आपस में मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग से कारण जोड़ें अंश में राम हर्षपूर्वक हनुमान को गले लगाते हैं और तुरंत वैद्य उपचार करता है। इसके बाद लक्ष्मण उठ बैठते हैं। घटनाओं का यह क्रम बताता है कि हनुमान समय पर संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण के जीवन की रक्षा के साधन बने हैं।

चरण 2: अन्य कारणों की जाँच करें (A) सीता का पता लगाना हनुमान की पहले की सेवा है, इस प्रसंग का कारण नहीं। (C) विनम्रता राम के स्वभाव का गुण है, पर यहाँ कृतज्ञता का विशिष्ट कारण सेवा है। (D) वैद्य को लाना सहायक कार्य है, किंतु यहाँ निर्णायक उपकार संजीवनी को समय पर लाना है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — समय पर संजीवनी बूटी लाने के कारण।

त्वरित सुझाव: कृतज्ञता का कारण चुनते समय उसी प्रसंग में हुए तत्काल उपकार पर ध्यान दें।

4(ii). भालू और कपि समूह की प्रसन्नता का कारण था – [1 अंक]

(A) राम का हनुमान को गले लगाना।

(B) हनुमान का सुषैन वैद्य को लाना।

(C) हनुमान का संजीवनी बूटी लाना।

(D) लक्ष्मण का स्वस्थ होना।

सही उत्तर: (D) लक्ष्मण का स्वस्थ होना।

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में घटनाओं का क्रम भाव का कारण स्पष्ट करता है। लक्ष्मण का उठ बैठना, राम का उन्हें हृदय से लगाना और फिर भालू-कपियों का हर्षित होना एक-दूसरे से जुड़े हैं।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के केंद्रीय शब्द और दिए गए संदर्भ का आपस में मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में प्रमाण पहचानें 'उठि बैठे लछिमन हरषाई' के बाद राम अपने भाई को गले लगाते हैं। इसी के आगे 'हरषे सकल भालु कपि ब्राता' आता है। लक्ष्मण के स्वस्थ होने से पूरे दल का संकट टलता है और सबकी प्रसन्नता का सीधा कारण यही है।

चरण 2: साधन और परिणाम का भेद करें (A) राम का हनुमान को गले लगाना पहले आता है। (B) वैद्य को लाना और (C) संजीवनी लाना उपचार के साधन हैं। प्रश्न समूह की प्रसन्नता का कारण पूछता है, इसलिए उपचार का सफल परिणाम, अर्थात लक्ष्मण का स्वस्थ होना, सबसे सटीक उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — लक्ष्मण का स्वस्थ होना।

त्वरित सुझाव: प्रसन्नता के कारण में तैयारी के कार्यों के बजाय प्राप्त सुखद परिणाम पहचानें।

4(iii). रावण द्वारा कौन-सा वृत्तांत सुना गया ? [1 अंक]

(A) लक्ष्मण के मूर्च्छित होने का

(B) राम के समुद्र पार आने का

(C) हनुमान द्वारा वैद्य ले जाने का

(D) लक्ष्मण की मूर्च्छा भंग होने का

सही उत्तर: (D) लक्ष्मण की मूर्च्छा भंग होने का

हल:

अवधारणा:

- सर्वनाम या संकेतवाचक पद का संदर्भ उसके पहले वर्णित घटना से पहचाना जाता है। यहाँ यह वृत्तांत लक्ष्मण के उपचार और उनके पुनः उठ बैठने से संबंधित है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के केंद्रीय शब्द और दिए गए संदर्भ का आपस में मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: यह वृत्तांत का संदर्भ खोजें अंश में वैद्य के उपचार से लक्ष्मण उठ बैठते हैं और राम सहित समस्त दल प्रसन्न होता है। उसके बाद 'यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ' आता है। रावण को मिली निर्णायक सूचना लक्ष्मण की मूर्च्छा टूट जाने और उनके स्वस्थ होने की है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें (A) लक्ष्मण के मूर्च्छित होने की सूचना रावण के लिए दुख का कारण नहीं होती। (B) समुद्र पार आने का प्रसंग इन पंक्तियों का विषय नहीं है। (C) वैद्य को ले जाना बीच का कार्य है; रावण का विषाद उपचार की सफलता से जुड़ा है। इसलिए (D) उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — लक्ष्मण की मूर्च्छा भंग होने का वृत्तांत।

त्वरित सुझाव: यह वृत्तांत जैसे संकेत के लिए उससे पहले के पूरे घटना-क्रम का मुख्य परिणाम देखें।

4(iv). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : दुखी रावण बार-बार सिर धुन कर पछता रहा था।

कारण : विजय की आशाओं पर पानी फिरता दिख रहा था। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन-कारण प्रश्न में पहले दोनों कथनों की सत्यता और फिर उनके कारणात्मक संबंध की जाँच की जाती है।
- रावण की मनोदशा लक्ष्मण की मूर्च्छा टूटने के समाचार से बदलती है।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें 'अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ' से स्पष्ट है कि रावण अत्यंत दुखी होकर बार-बार सिर धुन रहा था। इसलिए प्रश्न का कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें लक्ष्मण के फिर स्वस्थ हो जाने से राम-पक्ष का संकट टल गया। रावण के लिए यह प्रतिकूल समाचार था, क्योंकि जिस स्थिति से वह लाभ की आशा कर सकता था, वह बदल गई। इसलिए विजय की आशाओं पर पानी फिरता दिखने वाला कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध परखें विजय की आशा को लगा यही आघात रावण के विषाद और पछतावे को समझाता है। अतः कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A) कारण को और (B) कथन को गलत मानते हैं; (C) दोनों का व्याख्यात्मक संबंध नकारता है। इसलिए ये तीनों विकल्प अनुपयुक्त हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है। कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: कथन और कारण सही होने के बाद यह भी जाँचें कि दिया कारण उसी प्रतिक्रिया को समझाता है।

4(v). व्याकुल रावण कुंभकरण के पास क्यों गया होगा ? [1 अंक]

(A) अपना दुख बाँटने

(B) युद्ध में सहायता पाने

(C) युद्ध में हुई हानि का वर्णन करने

(D) राम की सेना द्वारा किए जाने वाले विनाश का वर्णन करने

सही उत्तर: (B) युद्ध में सहायता पाने

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में लक्ष्मण के स्वस्थ होने से रावण की विजय की आशा घटती है। उसकी व्याकुलता और कुंभकरण को जगाने के प्रयास युद्ध में नई सहायता जुटाने की आवश्यकता दिखाते हैं।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के केंद्रीय शब्द और दिए गए संदर्भ का आपस में मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: घटना से उद्देश्य समझें रावण लक्ष्मण के पुनर्जीवित होने का समाचार सुनकर दुखी होता है। इसके तुरंत बाद वह कुंभकरण के पास जाता है और 'बिबिध जतन करि ताहि जगावा'। युद्ध के इस संकट में पराक्रमी कुंभकरण को जगाना सैन्य सहायता पाने के उद्देश्य से है।

चरण 2: अन्य प्रयोजनों को परखें (A) दुख बाँटना, (C) युद्ध की हानि बताना और (D) विनाश का वर्णन करना केवल बातचीत के विषय हो सकते हैं। वे कुंभकरण को इतने प्रयत्न से जगाने का प्रमुख उद्देश्य स्पष्ट नहीं करते। (B) युद्ध में सहायता पाना घटनाक्रम और रावण की तत्काल आवश्यकता से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — युद्ध में सहायता पाने।

त्वरित सुझाव: युद्ध के बीच किसी योद्धा को जगाने का उद्देश्य उसके पराक्रम से मिलने वाली सहायता से जोड़ें।

---

5. पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावतः ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय लछमिन अब आई' की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गईं। पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को खरी खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक-फेंककर उसने पिता के चिर बिछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की। [5 अंक]

5(i). विमाता द्वारा भक्तिन के पास उसके पिता की मृत्यु का समाचार देर से पहुँचाने का कारण क्या नहीं है ? [1 अंक]

(A) पिता का उस पर अगाध प्रेम होना।

(B) संपत्ति उसके नाम किए जाने का भय होना।

(C) उसके रोने-पीटने से अपशकुन होना।

(D) मन ही मन भक्तिन से ईर्ष्या होना।

सही उत्तर: (C) उसके रोने-पीटने से अपशकुन होना।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में निषेध पहचानना और दो अलग पात्रों के कारणों को अलग रखना आवश्यक है।
- उत्तर के लिए संबंधित शब्दों और प्रसंग का मिलान करके सभी विकल्पों की उपयुक्तता जाँची जाती है।

चरण 1: विमाता का कारण पहचानें पिता का भक्तिन के प्रति अगाध स्नेह विमाता की ईर्ष्या बढ़ाता था। संपत्ति की रक्षा में उसकी सतर्कता भी समाचार रोकने से जुड़ी है। इसलिए विकल्प (A), (B) और (D) उसी के व्यवहार के कारण हैं।

चरण 2: सास का कारण अलग करें रोने-पीटने के अपशकुन से बचने की बात गद्यांश में सास के लिए कही गई है। इसे विमाता का कारण बताना पात्रों के व्यवहार को मिला देना होगा। प्रश्न कारण नहीं होने वाला विकल्प पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष उसके रोने-पीटने से अपशकुन होना विमाता का कारण नहीं है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: नहीं पूछे जाने पर कारणों की सूची से उस बात को हटाएँ जो दूसरे पात्र के लिए कही गई हो।

5(ii). 'पैरों के पंख गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए।' – पंक्ति का आशय है – [1 अंक]

(A) खुशी का समाप्त हो जाना

(B) थकावट का अनुभव हो जाना

(C) असलियत का पता लगना

(D) पैरों की गति शिथिल होना

सही उत्तर: (A) खुशी का समाप्त हो जाना

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का भावार्थ प्रसंग से निकलता है; उसके शब्दों का शाब्दिक अर्थ पर्याप्त नहीं होता।
- उत्तर के लिए संबंधित शब्दों और प्रसंग का मिलान करके सभी विकल्पों की उपयुक्तता जाँची जाती है।

चरण 1: पहले की मनःस्थिति देखें सास ने भक्तिन को अचानक सजाकर नैहर जाने दिया। पिता से मिलने की आशा में वह बहुत प्रसन्न हुई और तेजी से चली। पैरों में पंख लगना इसी उत्साह का बिंब है।

चरण 2: बाद की मनःस्थिति समझें गाँव में करुण आवाजें और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ देखकर उसका उत्साह जाता रहा। (B) साधारण शारीरिक थकान है और (D) केवल चाल धीमी होना है। (C) परिस्थिति जानने का कारण बताता है, जबकि पूछा गया भाव खुशी का समाप्त होना है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय खुशी का समाप्त हो जाना है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पंख लगने और पंख झड़ने को साथ पढ़ें; उत्साह और उसके नष्ट होने का संबंध स्पष्ट होगा।

5(iii). 'हाय लछमिन अब आई' – गाँववालों द्वारा कहे गए ये शब्द प्रकट करते हैं – [1 अंक]

(A) उसके प्रति सहानुभूति

(B) उसके प्रति ममता

(C) उसके प्रति दुख

(D) उसके प्रति उपहास

सही उत्तर: (A) उसके प्रति सहानुभूति

हल:

अवधारणा:

- संवाद का भाव उसके साथ दिए कथावाचक के वर्णन से निश्चित किया जाता है।
- उत्तर के लिए संबंधित शब्दों और प्रसंग का मिलान करके सभी विकल्पों की उपयुक्तता जाँची जाती है।

चरण 1: निर्णायक संकेत पढ़ें गाँववालों की आवाज में भक्तिन के देर से पहुँचने और पिता को न देख पाने का खेद है। गद्यांश स्वयं उनकी दृष्टियों को सहानुभूतिपूर्ण कहता है; यही शब्द उत्तर की सीधी पुष्टि करता है।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचें (B) ममता में वात्सल्य का भाव प्रधान होता है, जो यहाँ नहीं है। (C) दुख सामान्य भाव है, पर उसके प्रति संवेदना का विशिष्ट भाव सहानुभूति है। (D) उपहास असंगत है, क्योंकि ग्रामीण उसकी पीड़ा समझ रहे हैं, हँसी नहीं उड़ा रहे।

चरण 3: निष्कर्ष ये शब्द भक्तिन के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: संवाद के ठीक बाद आए भावसूचक विशेषण को खोजें; यहाँ सहानुभूतिपूर्ण निर्णायक संकेत है।

5(iv). गद्यांश में प्रयुक्त 'अप्रत्याशित अनुग्रह' क्या था ? [1 अंक]

(A) सास द्वारा भक्तिन का साज-शृंगार कर पिता के घर विदा करना।

(B) सास द्वारा भक्तिन को नैहर जाने के लिए कहना।

(C) विमाता द्वारा भक्तिन के लिए बुलावा भेजना।

(D) सास का भक्तिन के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना।

सही उत्तर: (A) सास द्वारा भक्तिन का साज-शृंगार कर पिता के घर विदा करना।

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित अनुग्रह का अर्थ है ऐसी कृपा या सुविधा जिसकी पहले आशा न हो।
- उत्तर के लिए संबंधित शब्दों और प्रसंग का मिलान करके सभी विकल्पों की उपयुक्तता जाँची जाती है।

चरण 1: घटना का पूरा रूप देखें सास ने नैहर जाने की बात कहने के साथ भक्तिन को पहना-उढ़ाकर विदा किया। इस संयुक्त व्यवहार ने उसे असाधारण प्रसन्नता दी। अनुग्रह उसी अचानक मिली सुसज्जित विदाई का संकेत है।

चरण 2: विकल्पों का भेद समझें (A) में सजाकर पिता के घर विदा करने की पूरी घटना है। (B) केवल अनुमति की बात कहता है और अधूरा है। (C) विमाता के बुलावे को विषय बनाता है। (D) सामान्य प्रेमपूर्ण व्यवहार है, जबकि यहाँ एक निश्चित विदाई का प्रसंग है।

चरण 3: निष्कर्ष सास द्वारा भक्तिन का साज-शृंगार कर पिता के घर विदा करना अप्रत्याशित अनुग्रह था। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: किसी संकेत पद का अर्थ चुनते समय उससे ठीक पहले की पूरी घटना देखें, केवल उसका एक अंश नहीं।

5(v). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए : [1 अंक]

(A) दुखी अपमानित भक्तिन उलटे पैरों ससुराल लौट आई।

(B) उसका सत्कार करने वाला पूरे गाँव में कोई नहीं था।

(C) विमाता पर आया क्रोध उसने पति पर गहने फेंककर शांत किया।

(D) सास को भला-बुरा कहकर उसने पिता की मृत्यु का दुख शांत किया।

सही उत्तर: (A) दुखी अपमानित भक्तिन उलटे पैरों ससुराल लौट आई।

हल:

अवधारणा:

- सही कथन चुनने के लिए घटना, पात्र और भाव के बीच संबंध को मूल गद्यांश से मिलाना चाहिए।
- उत्तर के लिए संबंधित शब्दों और प्रसंग का मिलान करके सभी विकल्पों की उपयुक्तता जाँची जाती है।

चरण 1: सही घटना मिलाएँ पिता की मृत्यु से भक्तिन दुखी थी और विमाता के अपमानजनक व्यवहार से जल रही थी। वह वहाँ पानी भी पिए बिना उलटे पैरों ससुराल लौट गई। अतः (A) सीधे गद्यांश से पुष्ट है।

चरण 2: बदले हुए संबंध पकड़ें (B) गलत है क्योंकि गाँववालों ने सहानुभूति दिखाई। (C) में क्रोध निकालने का पात्र बदल गया है; विमाता का क्रोध उसने सास को खरी-खोटी सुनाकर शांत किया। (D) भी उलटा है; पति पर गहने फेंककर उसने पिता के बिछोह की पीड़ा व्यक्त की।

चरण 3: निष्कर्ष दुखी और अपमानित भक्तिन उलटे पैरों ससुराल लौट आई। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: सास पर निकला क्रोध और पति के सामने व्यक्त शोक अलग रखें; इन्हें बदलने वाले विकल्प गलत होंगे।

6(i). किशनदा की तरह घर-गृहस्थी का बबाल न पालकर जीवन समाज के नाम समर्पित करने की भावना यशोधर बाबू के मन में क्यों आती थी ? [1 अंक]

(A) पत्नी-बच्चों से मतभेद होने के कारण

(B) घर-गृहस्थी के जंजाल से थकने के कारण

(C) जीवन का मर्म समझ में आने के कारण

(D) परिवार से मोह भंग हो जाने के कारण

सही उत्तर: (A) पत्नी-बच्चों से मतभेद होने के कारण

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू की मन:स्थिति परिवार के बदलते मूल्यों और किशनदा के आदर्श के संदर्भ में समझी जाती है।
- उत्तर के लिए संबंधित शब्दों और प्रसंग का मिलान करके सभी विकल्पों की उपयुक्तता जाँची जाती है।

चरण 1: मतभेद का प्रसंग समझें यशोधर बाबू परंपरागत संस्कारों को महत्त्व देते हैं, जबकि पत्नी और बच्चे आधुनिक जीवनशैली अपनाते हैं। उनकी रुचियाँ तथा विचार परिवार से मेल नहीं खाते। ऐसे क्षणों में उन्हें किशनदा का अविवाहित सामाजिक जीवन आकर्षित करता है।

चरण 2: अन्य कारणों से भेद करें (B) सामान्य घरेलू थकावट को कारण बनाता है, जबकि विशिष्ट कारण वैचारिक मतभेद है। (C) जीवन का अंतिम मर्म पा लेने का दावा करता है। (D) स्थायी मोहभंग कहता है, पर यशोधर बाबू परिवार से जुड़े रहते हैं और उसके व्यवहार से प्रभावित होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पत्नी-बच्चों से मतभेद होने के कारण यह भावना आती थी। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: यशोधर बाबू के असंतोष को आधुनिक परिवार और उनके पुराने संस्कारों के टकराव से जोड़कर देखें।

6(ii). यशोधर बाबू ने डी.डी.ए. के फ़्लैट के लिए पैसा क्यों जमा नहीं किया था ? [1 अंक]

(A) वह रिटायरमेंट के बाद गाँव में बसना चाहते थे।

(B) उन्हें तीनों में किसी एक लड़के का सरकारी नौकरी में आने का विश्वास था।

(C) उनके पास फ़्लैट बुक कराने के लिए पैसे नहीं थे।

(D) वे योजनाबद्ध तरीके से काम नहीं करते थे।

सही उत्तर: (B) उन्हें तीनों में किसी एक लड़के का सरकारी नौकरी में आने का विश्वास था।

हल:

अवधारणा:

- कथा में किसी निर्णय का कारण पात्र की स्पष्ट धारणा से लिया जाता है, सामान्य अनुमान से नहीं।
- उत्तर के लिए संबंधित शब्दों और प्रसंग का मिलान करके सभी विकल्पों की उपयुक्तता जाँची जाती है।

चरण 1: यशोधर बाबू की अपेक्षा देखें उन्हें विश्वास था कि उनके तीन पुत्रों में से कोई एक सरकारी नौकरी में आ जाएगा। उससे सरकारी आवास की सुविधा बनी रहने की आशा थी। इसलिए अलग निजी फ़्लैट के लिए पहले से पैसा जमा करने की आवश्यकता उन्होंने नहीं समझी।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचें (A) गाँव में बसने की इच्छा को इस निर्णय का कारण बताता है, जो यहाँ निर्णायक तथ्य नहीं है। (C) आर्थिक अभाव का अनुमान है। (D) उनके स्वभाव पर सामान्य टिप्पणी है। प्रश्न की ठोस पाठगत वजह पुत्र की सरकारी नौकरी की आशा ही है।

चरण 3: निष्कर्ष उन्हें तीनों में किसी एक लड़के के सरकारी नौकरी में आने का विश्वास था। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: आवास के निर्णय में सरकारी नौकरी और सरकारी क्वार्टर की कड़ी याद रखें; अनुमानित आर्थिक अभाव न चुनें।

6(iii). किशनदा कभी-कभी इस अनुरोध की रक्षा कर देते। – इस वाक्य में किस 'अनुरोध की रक्षा' की बात हो रही है ? [1 अंक]

(A) यशोधर बाबू को सुबह जल्दी उठाने की

(B) यशोधर बाबू को सुबह देर से उठाने की

(C) यशोधर बाबू के घर चाय-पीने की

(D) यशोधर बाबू के साथ सैर पर जाने की

सही उत्तर: (C) यशोधर बाबू के घर चाय-पीने की

हल:

अवधारणा:

- अनुरोध जैसे संकेत शब्द का अर्थ उसके पहले कही गई विशिष्ट बात से निर्धारित होता है।
- उत्तर के लिए संबंधित शब्दों और प्रसंग का मिलान करके सभी विकल्पों की उपयुक्तता जाँची जाती है।

चरण 1: सुबह मिलने का प्रसंग देखें किशनदा सैर से लौटते समय यशोधर बाबू के क्वार्टर में झाँककर उनका हाल लेते थे। यशोधर बाबू उन्हें अपने यहाँ चाय पीकर जाने के लिए कहते थे। कभी-कभी किशनदा यह आग्रह मान लेते थे।

चरण 2: अनुरोध को आदतों से अलग रखें (C) इसी चाय पीने के आग्रह से मेल खाता है। (A) जल्दी उठाने और (D) सैर पर जाने की बातें किशनदा की पहले की सीख से जुड़ी हैं। (B) देर से उठाने का आग्रह उस सीख के विपरीत है। ये तीनों यहाँ उल्लिखित अनुरोध नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष यह यशोधर बाबू के घर चाय पीने के अनुरोध की रक्षा की बात है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: संकेत शब्द अनुरोध का पूर्वसंदर्भ खोजें; पास की दूसरी घटनाओं को उसका अर्थ मानने से बचें।

6(iv). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प को चुनकर लिखिए :
कथन : यदि ईख को और कुछ दिन खेत में खड़ी रहने दिया जाए तो गुड़ जरा ज्यादा निकलता है।
कारण : देर तक खेत में खड़ी रहने वाली ईख में पानी की मात्रा कम होती है और रस गाढ़ा हो जाता है। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण का संबंध निर्धारित करने के लिए पहले दोनों की सत्यता और फिर उनके बीच का कारणात्मक संबंध देखना चाहिए।
- सही उत्तर का चयन पाठ के प्रसंग और विकल्पों के सटीक अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: कथन की जाँच ईख को खेत में कुछ और दिन खड़ा रखने पर उससे गुड़ कुछ अधिक निकलने की बात पाठ के प्रसंग के अनुसार सही है। इसलिए कथन को गलत बताने वाला विकल्प (B) स्वीकार नहीं होगा।

चरण 2: कारण और व्याख्या की जाँच देर तक खड़ी ईख में पानी की मात्रा घटती है और उसका रस अधिक गाढ़ा होता है। गुड़ बनाने में यही गाढ़ापन उपयोगी है; अतः कारण भी सही है और कथन की व्याख्या करता है। विकल्प (A) कारण को गलत और विकल्प (C) दोनों के संबंध को असंगत बताता है, इसलिए वे गलत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कथन-कारण प्रश्न में दोनों को सत्य मान लेने के बाद भी जाँचें कि कारण उसी परिणाम को स्पष्ट करता है।

6(ix). निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है ? [1 अंक]

(A) बौद्ध स्तूप – पुराना लैंडस्केप

(B) गढ़ – महंतों की समाधियाँ

(C) महाकुंड – सामूहिक स्नान का अंग

(D) ग्रिडशैली – आड़ी-सीधी सड़कें

सही उत्तर: (B) गढ़ – महंतों की समाधियाँ

हल:

अवधारणा:

- सुमेलन की जाँच में प्रत्येक निर्माण को पाठ में बताए उसके स्वरूप अथवा उपयोग से जोड़ना चाहिए।
- सही उत्तर का चयन पाठ के प्रसंग और विकल्पों के सटीक अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: सही युग्मों की पहचान बौद्ध स्तूप को पुराने लैंडस्केप का अंग बताया गया है। महाकुंड का संबंध सामूहिक स्नान से है और ग्रिडशैली नगर की आड़ी-सीधी, व्यवस्थित सड़कों से संबंधित है। इसलिए विकल्प (A), (C) और (D) पाठ के अनुसार सही सुमेल हैं।

चरण 2: असंगत युग्म की पहचान गढ़ नगर का ऊँचा, विशिष्ट निर्माण-क्षेत्र है। उसे महंतों की समाधियाँ कहना उसके स्वरूप का सही परिचय नहीं है। प्रश्न सही सुमेल नहीं पूछता, इसलिए सही निर्माणों को चुनने के स्थान पर इसी गलत संबंध को चुनना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष गढ़ – महंतों की समाधियाँ सही सुमेलित युग्म नहीं है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में “नहीं” पर ध्यान देकर पहले सही युग्म हटाएँ; शेष असंगत संबंध ही उत्तर होगा।

6(v). ‘अब तू बता, मैं का करूँ ?’ – कथन से आनंदा के माँ के चरित्र की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है ? [1 अंक]

(A) दुर्बलता

(B) परवशता

(C) अक्षमता

(D) विवशता

सही उत्तर: (D) विवशता

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की विशेषता पहचानते समय पात्र के कथन को उसकी पारिवारिक परिस्थिति और तत्काल प्रसंग से जोड़ना चाहिए।
- सही उत्तर का चयन पाठ के प्रसंग और विकल्पों के सटीक अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: कथन का भाव समझना माँ का “अब तू बता, मैं का करूँ?” कहना उसकी विवशता को प्रकट करता है। वह आनंदा की स्थिति समझती है, लेकिन घर की परिस्थितियों और पिता के रवैये के सामने अपनी इच्छा के अनुसार रास्ता नहीं निकाल पा रही है।

चरण 2: निकट अर्थ वाले विकल्पों में भेद यह सामान्य दुर्बलता (A) अथवा कार्य करने की अक्षमता (C) का कथन नहीं है। परवशता (B) में किसी और के अधीन होने पर बल है, जबकि यहाँ अपनी कठिन परिस्थिति में कोई उपाय न सूझने की लाचारी प्रमुख है। अतः प्रसंग के लिए विवशता सर्वाधिक सटीक शब्द है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन से आनंदा की माँ की विवशता प्रकट होती है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मिलते-जुलते भाववाचक विकल्पों में पात्र की उस क्षण की समस्या देखें: यहाँ उपाय न निकलने की लाचारी निर्णायक है।

6(vi). कक्षा की बेंच पर बैठे आनंदा की तुलना किससे की गई है ? [1 अंक]

(A) खेती के काम से सुस्ताते पेड़ के नीचे बैठे लड़के से

(B) लड़कों की मार से घायल कौए के बच्चे से

(C) बस अड्डे पर पोटली सँभाले बस की प्रतीक्षा करते लड़के से

(D) रेलवे स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा करने वाले लड़के से

सही उत्तर: (C) बस अड्डे पर पोटली सँभाले बस की प्रतीक्षा करते लड़के से

हल:

अवधारणा:

- उपमा पहचानने के लिए पाठ में आए चित्र और पात्र की उस समय की असहज स्थिति का मिलान करना चाहिए।
- सही उत्तर का चयन पाठ के प्रसंग और विकल्पों के सटीक अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पाठ का तुलनात्मक चित्र कक्षा की बेंच पर बैठा आनंदा अपने को अपरिचित वातावरण में अकेला और असहज अनुभव करता है। उसकी तुलना बस अड्डे पर अपनी पोटली सँभाले बस की प्रतीक्षा करते हुए लड़के से की गई है। यह चित्र उसकी संकोचपूर्ण और अलग-थलग स्थिति व्यक्त करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर खेती से थककर पेड़ के नीचे विश्राम करता लड़का (A) यहाँ की तुलना नहीं है। घायल कौए का बच्चा (B) पीड़ा का अलग बिंब है। रेलवे स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा (D) भी इसी तरह का दृश्य लग सकता है, पर पाठ में स्थान बस अड्डा और साथ पोटली सँभालने की बात है।

चरण 3: निष्कर्ष आनंदा की तुलना बस अड्डे पर पोटली सँभाले बस की प्रतीक्षा करते लड़के से की गई है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: उपमा के प्रश्न में केवल सामान्य समानता न देखें; स्थान और पोटली जैसे विशिष्ट विवरण भी मिलाएँ।

6(vii). 'मेरी ही पाठशाला मुझे चोंच मार-मार कर घायल कर रही थी।' – इस पंक्ति का आशय है – [1 अंक]

(A) पाठशाला में आनंदा की खिल्ली उड़ाई जा रही थी।

(B) पाठशाला में उसकी पिटाई की जा रही थी।

(C) पाठशाला में उसे कटु वचन कहे जा रहे थे।

(D) पाठशाला में उसे दण्डित किया जा रहा था।

सही उत्तर: (A) पाठशाला में आनंदा की खिल्ली उड़ाई जा रही थी।

हल:

अवधारणा:

- आलंकारिक कथन का अर्थ उसके प्रसंग से खुलता है; यहाँ चोंच मारना मानसिक आघात का बिंब है।
- सही उत्तर का चयन पाठ के प्रसंग और विकल्पों के सटीक अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पंक्ति का आशय आनंदा पढ़ने की इच्छा लेकर पाठशाला पहुँचा था, पर वहाँ उसकी स्थिति और रूप-रंग को लेकर उपहास हुआ। इसलिए जिस पाठशाला से उसे आशा थी, उसी में खिल्ली उड़ाए जाने से वह भीतर से आहत हुआ। "चोंच मार-मार कर घायल" होना इसी मानसिक पीड़ा को व्यक्त करता है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच विकल्प (A) इस सामूहिक उपहास का सीधा अर्थ देता है। पिटाई (B) और दंड (D) शारीरिक अथवा अनुशासनात्मक कार्रवाई बताते हैं, जो इस बिंब का आशय नहीं है। कटु वचन (C) आघात का सामान्य रूप है, पर प्रसंग में विशेष रूप से उसका मजाक उड़ाया जा रहा था।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि पाठशाला में आनंदा की खिल्ली उड़ाई जा रही थी। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: बिंब का शब्दशः अर्थ लेने से पहले देखें कि प्रसंग में पात्र को शारीरिक पीड़ा हुई है या मन पर चोट पहुँची है।

6(viii). 'महाकुंड' के विषय में निम्नलिखित में कौन-सा कथन असत्य है ? [1 अंक]

(A) कुंड के पानी के बंदोबस्त के लिए एक तरफ कुआँ है।
(B) महाकुंड के चारों तरफ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं।
(C) कुंड से पानी की निकासी के लिए पक्की ईंटों से बनी नालियाँ हैं।
(D) कुंड से पानी के रिसाव को रोकने के लिए तल और दीवारों पर चिनाई की गई है।

सही उत्तर: (B) महाकुंड के चारों तरफ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं।

हल:

अवधारणा:

- असत्य कथन पहचानने के लिए महाकुंड की जल-व्यवस्था और उसके आसपास के निर्माणों का पाठगत विवरण देखना चाहिए।
- सही उत्तर का चयन पाठ के प्रसंग और विकल्पों के सटीक अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: जल-व्यवस्था से जुड़े कथन महाकुंड के एक ओर कुआँ पानी के प्रबंध के लिए था। पानी की निकासी के लिए पक्की ईंटों की नालियाँ थीं और रिसाव रोकने के लिए तल तथा दीवारों की विशेष चिनाई की गई थी। इसलिए विकल्प (A), (C) और (D) उसके निर्माण का सही विवरण प्रस्तुत करते हैं।

चरण 2: असत्य विवरण का निर्धारण पाठ में महाकुंड के उत्तर की ओर साधुओं के कक्ष होने का उल्लेख है। इसलिए कक्षों को साधुओं से जोड़ना गलत नहीं है; गलती उनके चारों तरफ होने के दावे में है। उत्तर दिशा में बने कक्षों को चारों दिशाओं में बना हुआ बताने से विवरण बदल जाता है। इसी स्थान-संबंधी त्रुटि के कारण विकल्प (B) असत्य है।

चरण 3: निष्कर्ष "महाकुंड के चारों तरफ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं" असत्य कथन है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: किसी कथन में मुख्य वस्तु सही होने पर भी दिशा और विस्तार जाँचें; यहाँ "उत्तर की ओर" के स्थान पर "चारों तरफ" कहना त्रुटि है।

6(x). मुअनजो-दड़ो के मिले अवशेषों में अपने मूल स्वरूप के नजदीक बचे निर्माण के रूप में है – [1 अंक]

(A) महाकुंड
(B) गढ़
(C) बौद्ध स्तूप
(D) उपासना केंद्र

सही उत्तर: (A) महाकुंड

हल:

अवधारणा:

- पाठ में किसी निर्माण के ऐतिहासिक महत्त्व और उसके मूल रूप में सुरक्षित रहने की स्थिति में अंतर करना चाहिए।
- सही उत्तर का चयन पाठ के प्रसंग और विकल्पों के सटीक अर्थ के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पाठ में सुरक्षित स्वरूप का उल्लेख मुअनजो-दड़ो में प्राप्त निर्माणों में महाकुंड अपने मूल स्वरूप के अधिक निकट बचा है। उसकी स्पष्ट संरचना से स्नानागार की योजना, जल-प्रबंध और निर्माण-कौशल का परिचय मिलता है। इसी विशेषता को प्रश्न में पहचानना है।

चरण 2: अन्य निर्माणों से भेद गढ़ (B) व्यापक ऊँचे परिसर को बताता है। बौद्ध स्तूप (C) और उपासना केंद्र (D) भी दिए गए विकल्प हैं, पर मूल स्वरूप के निकट बचे निर्माण के रूप में यहाँ महाकुंड का उल्लेख है। इसलिए प्रसिद्ध स्मारक अथवा धार्मिक निर्माण देखकर कोई दूसरा विकल्प चुनना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अपने मूल स्वरूप के नजदीक बचा निर्माण महाकुंड है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: निर्माण की प्रसिद्धि के बजाय प्रश्न के विशेष संकेत "मूल स्वरूप के नजदीक" को पाठ के वर्णन से मिलाएँ।

7(क). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

ओ.टी.टी. पर्दा : मनोरंजन की नई परिभाषा [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, मौलिक दृष्टि और संवेदनापूर्ण भाषा प्रस्तुत की जाती है। इस विषय का केंद्र डिजिटल माध्यम की सुविधा और उसके सामाजिक प्रभाव है।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में आकर्षक आरंभ, विचारों का क्रमबद्ध विकास और प्रभावपूर्ण समापन आवश्यक है। भाषा सहज रहे तथा विचार विषय से सीधे जुड़े हों।

चरण 1: विषय का आशय और प्रस्तुति तय करें लेख का शीर्षक "ओ.टी.टी. पर्दा : मनोरंजन की नई परिभाषा रखें। सामान्य जीवन के किसी दृश्य से शुरुआत करें, जिससे पाठक विषय का अनुभव कर सके। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र का पता, संबोधन या औपचारिक समापन न जोड़ें। कथ्य में अवलोकन और विचार दोनों हों; केवल नारे या सूचनाओं की सूची देने से बचें।

चरण 2: विचारों का क्रम और भाषा चुनें विषय का विकास दर्शक की स्वतंत्रता, भाषायी विविधता और समय के संतुलन के क्रम में करें। आरंभ के दृश्य को मुख्य विचार से जोड़ें और अंत में पाठक को सोचने की दिशा दें। छोटे, स्पष्ट वाक्य लिखें। अतिशयोक्ति तथा अप्रमाणित आँकड़ों से बचें; उपयुक्त बिंब और संतुलित तर्क लेख को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 3: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **ओ.टी.टी. पर्दा : मनोरंजन की नई परिभाषा**

कभी पूरा परिवार कार्यक्रम के निश्चित समय की प्रतीक्षा करता था; आज मनोरंजन हमारी जेब में चलता है। ओ.टी.टी. ने दर्शक को अपनी पसंद, भाषा और सुविधा के अनुसार कहानी चुनने की स्वतंत्रता दी है। बस, मेट्रो या घर का कमरा, हर जगह एक नया पर्दा खुल जाता है। क्षेत्रीय कथाएँ दूर तक पहुँच रही हैं और नए कलाकारों को अवसर मिल रहे हैं। लेकिन लगातार अगला प्रसंग देखने का आकर्षण नींद, पढ़ाई और पारिवारिक संवाद छीन सकता है। इसलिए चयन में विवेक और समय की सीमा आवश्यक है। मनोरंजन तभी सार्थक है जब वह संवेदना बढ़ाए, हमें जीवन से काटे नहीं। पर्दे का आकार छोटा हुआ है, पर उसके प्रति हमारी जिम्मेदारी बड़ी हो गई है।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में "ओ.टी.टी. पर्दा : मनोरंजन की नई परिभाषा विषय को दैनिक जीवन के अनुभव, सामाजिक चिंता और सकारात्मक दृष्टि के साथ विकसित किया गया है। विचारों का स्वाभाविक क्रम और चिंतनपूर्ण समापन रचनात्मक लेख की अपेक्षा पूरी करते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले एक सजीव आरंभ, फिर विषय के दो प्रमुख पक्ष और अंत में विचारोत्तेजक वाक्य चुनें; लेख के मुख्य भाग को लगभग 120 शब्दों में रखें।

7(ख). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

बढ़ती जनसंख्या : घटते संसाधन [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, मौलिक दृष्टि और संवेदनापूर्ण भाषा प्रस्तुत की जाती है। इस विषय का केंद्र जनसंख्या और सीमित प्राकृतिक संसाधनों का संबंध है।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में आकर्षक आरंभ, विचारों का क्रमबद्ध विकास और प्रभावपूर्ण समापन आवश्यक है। भाषा सहज रहे तथा विचार विषय से सीधे जुड़े हों।

चरण 1: विषय का आशय और प्रस्तुति तय करें लेख का शीर्षक "बढ़ती जनसंख्या : घटते संसाधन रखें। सामान्य जीवन के किसी दृश्य से शुरुआत करें, जिससे पाठक विषय का अनुभव कर सके। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र का पता, संबोधन या औपचारिक समापन न जोड़ें। कथ्य में अवलोकन और विचार दोनों हों; केवल नारे या सूचनाओं की सूची देने से बचें।

चरण 2: विचारों का क्रम और भाषा चुनें विषय का विकास संसाधनों पर दबाव, असमान उपभोग और व्यावहारिक समाधान के क्रम में करें। आरंभ के दृश्य को मुख्य विचार से जोड़ें और अंत में पाठक को सोचने की दिशा दें। छोटे, स्पष्ट वाक्य लिखें। अतिशयोक्ति तथा अप्रमाणित आँकड़ों से बचें; उपयुक्त बिंब और संतुलित तर्क लेख को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 3: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **बढ़ती जनसंख्या : घटते संसाधन**

सुबह नल पर लगी लंबी कतार हमारे समय की कहानी कहती है। लोग बढ़ रहे हैं, पर पानी, जमीन और जंगल असीम नहीं हैं। नए घरों के लिए खेत सिकुड़ते हैं, सड़कों पर भीड़ बढ़ती है और शहरों की हवा भारी होती जाती है। समस्या केवल लोगों की संख्या नहीं, संसाधनों का असमान बँटवारा और अंधाधुंध उपभोग भी है। इसलिए समाधान में शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ और परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता जरूरी हैं। वर्षाजल संचयन, सार्वजनिक परिवहन और वस्तुओं का पुनः उपयोग भी दबाव घटा सकते हैं। हर व्यक्ति को सम्मानपूर्ण जीवन मिले, यही विकास की कसौटी होनी चाहिए। आज का संयम आने वाली पीढ़ियों के हिस्से का पानी, हरियाली और भविष्य बचा सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में "बढ़ती जनसंख्या : घटते संसाधन विषय को दैनिक जीवन के अनुभव, सामाजिक चिंता और सकारात्मक दृष्टि के साथ विकसित किया गया है। विचारों का स्वाभाविक क्रम और चिंतनपूर्ण समापन रचनात्मक लेख की अपेक्षा पूरी करते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले एक सजीव आरंभ, फिर विषय के दो प्रमुख पक्ष और अंत में विचारोत्तेजक वाक्य चुनें; लेख के मुख्य भाग को लगभग 120 शब्दों में रखें।

7(ग). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

घर के कबाड़घर में रखा पुराना टी.वी. [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में साधारण वस्तु से जुड़ी अनुभूति, कल्पना और स्मृति को मौलिक ढंग से व्यक्त किया जाता है।
- दिए गए विषय में पुराने टी.वी. को केंद्र में रखकर पारिवारिक संबंधों और बदलते समय का चित्र प्रस्तुत किया जा सकता है।

चरण 1: विषय का दृष्टिकोण और रूपरेखा लेख का केंद्र कबाड़घर में पड़ा पुराना टी.वी. है। पहले उसकी वर्तमान उपेक्षित दशा, फिर उसके साथ जुड़ी पारिवारिक स्मृतियाँ और अंत में स्मृतियों को सहेजने का भाव रखें। प्रथम पुरुष में अनुभव बताने से लेख आत्मीय बनेगा। टी.वी. को मानवीय रूप देना कल्पना का साधन है; इससे उसके प्रति लगाव व्यक्त होता है। घटना का क्रम वर्तमान से स्मृति और फिर वर्तमान की ओर लौटता है।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति की योजना संक्षिप्त शीर्षक दें। धूल, टूटा एंटीना और बंद स्क्रीन जैसे दृश्यात्मक विवरणों के साथ दादाजी, रविवार और परिवार की सामूहिक हँसी जोड़ें। लगभग 120 शब्दों के लेख में तकनीकी विवरण बढ़ाने के बजाय वस्तु और मनुष्य के

भावनात्मक संबंध को उभारें।

चरण 3: पूरा रचनात्मक लेख पुरानी स्क्रीन में बसी दुनिया

आज कबाड़घर साफ करते हुए कोने में रखा पुराना टी.वी. दिखाई दिया। धूल की चादर में लिपटा वह किसी भूले हुए बुज़ुर्ग जैसा लग रहा था। उसका टूटा एंटीना देखते ही वे रविवार याद आ गए, जब पूरा परिवार उसके सामने बैठता था। दादाजी समाचार सुनते, हम कार्टून देखते और माँ रसोई से झाँकती रहतीं। तस्वीर बिगड़ती तो छत पर जाकर एंटीना घुमाना भी एक उत्सव बन जाता। अब हर हाथ में मोबाइल है, लेकिन साथ बैठने का समय नहीं। मैंने धीरे से उसकी स्क्रीन पोंछी। उसमें अपना चेहरा दिखा और पीछे जैसे पुरानी हँसी गूँज उठी। वह बेकार मशीन नहीं, हमारे घर की यादों का संदूक था। मैंने तय किया, उसे बेचूँगा नहीं; सँभालकर रखूँगा।

चरण 4: निष्कर्ष लेख में पुराने टी.वी. के माध्यम से पारिवारिक आत्मीयता, बीते समय की स्मृतियाँ और वर्तमान जीवन में घटता सामूहिक संवाद उभरता है।

त्वरित सुझाव: पुराने टी.वी. की कोई ठोस विशेषता चुनकर उसे पारिवारिक स्मृति से जोड़ें और अंत में एक भावपूर्ण निर्णय दें।

8(i)(a). कहानीकार द्वारा कहानी में वर्णित मानसिक द्वंद्व को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में कथावाचक पात्र के मन की बात सीधे बता सकता है; नाटक में वही द्वंद्व मंच पर दर्शकों को सुनाई या दिखाई देना चाहिए।
- संवाद, स्वगत कथन, अभिनय और उपयुक्त मंचीय संकेत मानसिक संघर्ष को नाटकीय रूप देते हैं।

चरण 1: भीतरी संघर्ष को दृश्य बनाना पात्र के मन में चल रहे विरोधी विचारों को दूसरे पात्र के साथ संवाद या स्वयं से किए गए स्वगत कथन के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इससे दर्शक जान पाते हैं कि वह किन विकल्पों के बीच उलझा हुआ है।

चरण 2: मंचीय अभिव्यक्ति जोड़ना हाव-भाव, चेहरे की अभिव्यक्ति, मौन, बेचैन गतिविधियों और स्वर के उतार-चढ़ाव से उसके द्वंद्व को स्पष्ट किया जाता है। आवश्यकतानुसार प्रकाश और ध्वनि भी मनोदशा को उभार सकते हैं। इस प्रकार कहानी का वर्णन नाटक में संवाद और अभिनय बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी के मानसिक द्वंद्व को संवाद या स्वगत कथन तथा हाव-भाव, मौन और अभिनय के माध्यम से नाटक में रूपांतरित किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में एक वाचिक साधन, जैसे स्वगत कथन, और एक अभिनयगत साधन, जैसे हाव-भाव, अवश्य बताइए।

अथवा

8(i)(b). "लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप" प्रसंग के आधार पर रावण और कुंभकरण के बीच हुए संवाद के दृश्य को लगभग 40 शब्दों में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाटकीय संवाद में पात्रों की मनोदशा और मूल प्रसंग का आशय संक्षिप्त कथनों से सामने आता है।
- इस प्रसंग में कुंभकरण सीता-हरण पर रावण को दोष देता है और राम की शक्ति पहचानने की बात कहता है।

चरण 1: प्रसंग और दृश्य की योजना युद्ध के संकट से घिरा रावण कुंभकरण के सामने अपना दुख रखता है। कुंभकरण उसके अहंकार और सीता-हरण की निंदा करता है। संवाद में रावण की चिंता तथा कुंभकरण की स्पष्टवादिता रखें। विस्तृत कथावाचन के बजाय पात्रों के नाम के साथ छोटे कथन लिखें।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का संवाद-दृश्य (रावण चिंतित है।)

रावण : भाई! हमारे बड़े-बड़े योद्धा मारे गए। अब क्या होगा?

कुंभकरण : तुमने जगज्जननी सीता का हरण किया और अपना कल्याण चाहा! राम स्वयं भगवान हैं।

रावण : अब मेरी रक्षा करो।

कुंभकरण : पहले अपना अहंकार पहचानो; इसी ने संकट बुलाया।

चरण 3: निष्कर्ष संवाद में रावण की व्याकुलता और कुंभकरण द्वारा सीता-हरण तथा अहंकार की निंदा मूल प्रसंग के अनुरूप व्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: संवाद में कुंभकरण की फटकार और रावण की चिंता रखें; अनावश्यक युद्ध-वर्णन से शब्द-सीमा न बढ़ाएँ।

8(ii)(a). नए विषयों पर लेखन एक चुनौतीपूर्ण कार्य क्यों लगता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नए विषय पर लेखन में मौलिक विचार, कल्पनाशीलता और अनुभवों के बीच संबंध स्थापित करने की क्षमता आवश्यक होती है।
- लेखक को विषय के अनुरूप सामग्री चुनकर उसे स्पष्ट, क्रमबद्ध और प्रभावी भाषा में प्रस्तुत करना होता है।

चरण 1: चुनौती के कारण पहचानें परिचित विषय पर पहले से संचित जानकारी और विचार उपलब्ध रहते हैं। नया विषय सामने आने पर लेखक के पास तैयार सामग्री या निश्चित रूपरेखा नहीं होती। इसलिए उसे अपने अनुभवों, स्मृतियों और कल्पना में से विषय के अनुकूल बिंदु स्वयं खोजने पड़ते हैं।

चरण 2: उत्तर नए विषयों पर लेखन चुनौतीपूर्ण लगता है, क्योंकि उनके बारे में पहले से तैयार विचार और पर्याप्त जानकारी नहीं होती। लेखक को कल्पनाशक्ति, मौलिक चिंतन तथा अनुभवों के सहारे सामग्री जुटानी पड़ती है। फिर उसे विषय की सीमा में रहते हुए विचारों को क्रमबद्ध, रोचक और प्रभावशाली भाषा में व्यक्त करना होता है।

चरण 3: निष्कर्ष नए विषय पर मौलिक सामग्री जुटाने और उसे संगठित रूप में अभिव्यक्त करने की आवश्यकता ही लेखन को चुनौतीपूर्ण बनाती है।

त्वरित सुझाव: नए विषय को अपने किसी अनुभव से जोड़ें, फिर उसके तीन प्रमुख बिंदुओं की रूपरेखा बनाकर लिखें।

अथवा

8(ii)(b). सिनेमा या रंगमंच (दृश्य माध्यम) और रेडियो नाटक में क्या अंतर है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सिनेमा और रंगमंच में दृश्य तथा श्रव्य, दोनों साधनों से कथा और पात्रों का परिचय मिलता है।
- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम है; संवाद, ध्वनि प्रभाव और संगीत दृश्य परिस्थितियों का बोध कराते हैं।

चरण 1: माध्यमों का आधार स्पष्ट करें सिनेमा और रंगमंच के दर्शक पात्रों की वेशभूषा, हावभाव, गतिविधियाँ और परिवेश देख सकते हैं। रेडियो के श्रोता यह सब नहीं देख सकते; उन्हें केवल सुनाई देने वाली सामग्री से पात्रों और घटनाओं की कल्पना करनी पड़ती है। इसीलिए उसकी रचना में ध्वनि की भूमिका केंद्रीय होती है।

चरण 2: उत्तर सिनेमा और रंगमंच दृश्य-श्रव्य माध्यम हैं। इनमें अभिनय, हावभाव, वेशभूषा तथा दृश्य-सज्जा भी अर्थ व्यक्त करते हैं। रेडियो नाटक केवल श्रव्य माध्यम है। उसमें पात्रों, स्थान, समय और घटनाओं का बोध संवादों, आवाज़ के उतार-चढ़ाव, संगीत और ध्वनि

प्रभावों से कराया जाता है; श्रोता इन्हीं के आधार पर दृश्य की कल्पना करता है।

चरण 3: निष्कर्ष दृश्य माध्यम में दृश्य और ध्वनि मिलकर कथा कहते हैं; रेडियो नाटक में यह दायित्व पूरी तरह श्रव्य संकेतों पर होता है।

त्वरित सुझाव: अंतर लिखते समय पहले देखने और सुनने का आधार बताएँ, फिर रेडियो के संवाद और ध्वनि प्रभावों की भूमिका जोड़ें।

9(क). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

तकनीकी विकास के बावजूद हिन्दी की वेब पत्रकारिता अपने शैशवकाल में ही क्यों है ? इसके विकास के लिए क्या आवश्यक है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न हिन्दी वेब पत्रकारिता के विकास की बाधाओं और उनके समाधान की समझ पर आधारित है।
- तकनीकी सुविधा के साथ मौलिक संपादकीय सामग्री, प्रशिक्षित पत्रकार तथा व्यापक पाठक-वर्ग भी आवश्यक हैं।

चरण 1: बाधाएँ और उपाय जोड़ें केवल इंटरनेट का विकास किसी भाषा की पत्रकारिता को स्वतः परिपक्व नहीं बनाता। हिन्दी में स्वतंत्र वेब पत्रकारिता को अपनी सामग्री, प्रस्तुति और पाठकों के साथ संबंध विकसित करना होता है। यदि वेबसाइट केवल अखबार की सामग्री दोहराए, तो माध्यम की तात्कालिकता और व्यापक संवाद की संभावनाओं का पर्याप्त उपयोग नहीं होता। विकास के उपायों को इन्हीं कठिनाइयों से जोड़कर प्रस्तुत करना चाहिए। मानकीकृत लिपि से सामग्री पढ़ना सुगम होता है, जबकि विश्वसनीय और नियमित समाचार पाठकों का भरोसा बढ़ाते हैं। पाठकों की सक्रिय भागीदारी भी इस माध्यम की उपयोगिता बढ़ाती है।

चरण 2: उत्तर : लगभग 60 शब्द तकनीकी विकास के बावजूद हिन्दी वेब पत्रकारिता में मौलिक सामग्री, प्रशिक्षित कर्मियों और पर्याप्त आर्थिक संसाधनों का अभाव है। अनेक वेबसाइटें मुद्रित अखबारों की सामग्री ही प्रस्तुत करती हैं। हिन्दी फ़ॉन्टों की असंगति तथा सीमित इंटरनेट पहुँच भी बाधाएँ रही हैं। विकास के लिए मानक यूनिकोड, सहज तकनीक, व्यापक पाठक-वर्ग, आर्थिक निवेश और नियमित, विश्वसनीय, स्वतंत्र समाचार-सामग्री आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष हिन्दी वेब पत्रकारिता का विकास तकनीकी सुगमता के साथ मौलिक सामग्री, योग्य कर्मियों, पाठक-विस्तार और आर्थिक आधार पर निर्भर है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में हर बाधा के साथ उसका उपाय सोचें; केवल तकनीकी प्रगति का उल्लेख करके संपादकीय सामग्री को न छोड़ें।

9(ख). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

मुद्रित माध्यमों की तुलना में भाषा-शैली के स्तर पर रेडियो और टी.वी. पर प्रस्तुत किए जाने वाले समाचारों में विशेष सावधानी क्यों बरतनी चाहिए ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित समाचार को पाठक अपनी गति से दोबारा पढ़ सकता है, जबकि प्रसारित समाचार का प्रवाह प्रसारण तय करता है।
- श्रव्य और दृश्य-श्रव्य समाचारों की भाषा पहली बार सुनते ही समझ में आने योग्य होनी चाहिए।

चरण 1: पाठक और श्रोता की स्थिति समझें अखबार में कठिन शब्द या लंबा वाक्य आने पर पाठक ठहरकर उसे फिर पढ़ सकता है। रेडियो और टेलीविजन के सामान्य प्रसारण में श्रोता ऐसा नहीं कर पाता। एक बात छूटने पर अगली सूचना समझने में भी कठिनाई हो सकती है। इसलिए समाचार लेखक को सुनकर समझने की प्रक्रिया ध्यान में रखनी चाहिए। रेडियो में दृश्य संकेत भी नहीं होते, इसलिए शब्दों और सही उच्चारण से ही समाचार का अर्थ स्पष्ट करना पड़ता है। टी.वी. में दृश्य उपलब्ध होते हैं, पर वाचन का उनसे मेल होना

आवश्यक है। दोनों माध्यमों में अस्पष्ट सर्वनामों और अनावश्यक विवरण से बचकर मुख्य सूचना सीधे प्रस्तुत की जानी चाहिए।

चरण 2: उत्तर : लगभग 60 शब्द मुद्रित समाचार को पाठक रुककर दोबारा पढ़ सकता है, पर रेडियो और टी.वी. के समाचार सुनते समय सामान्यतः ऐसा अवसर नहीं मिलता। इसलिए भाषा सरल, बोलचाल की, स्पष्ट और तुरंत समझ आने वाली होनी चाहिए। छोटे वाक्य, परिचित शब्द तथा सहज वाक्य-विन्यास आवश्यक हैं। कठिन शब्द, लंबे वाक्य और अस्पष्ट संदर्भ संदेश की समझ में बाधा डाल सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रसारण की क्षणभंगुरता के कारण समाचार की भाषा इतनी सहज और स्पष्ट हो कि श्रोता उसे पहली बार में समझ सके।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय दोबारा पढ़ने की सुविधा से तुलना करें और उसके बाद छोटे वाक्यों तथा परिचित शब्दों की आवश्यकता बताएँ।

9(ग). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
समाचार-पत्रों में अगर आर्थिक जगत से जुड़ी खबरें न हों तो वह संपूर्ण नहीं माना जाएगा, क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र का दायित्व जनजीवन के विविध पक्षों की विश्वसनीय जानकारी देना है।
- आर्थिक घटनाएँ व्यक्ति की आजीविका, क्रयशक्ति और देश के विकास से सीधे जुड़ी होती हैं।

चरण 1: प्रश्न का आधार समझिए यह प्रश्न समाचार-पत्र की संपूर्णता को आर्थिक समाचारों की अनिवार्यता से जोड़ता है। उत्तर में केवल व्यापारियों की आवश्यकता बताना पर्याप्त नहीं है। आर्थिक गतिविधियों का सामान्य नागरिक, उपभोक्ता, कर्मचारी और किसान के जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 2: मुख्य संबंध पहचानिए उत्पादन, कृषि, उद्योग, रोजगार, बाजार और सरकारी आर्थिक नीतियाँ समाज के अन्य क्षेत्रों को प्रभावित करती हैं। महँगाई या करों में बदलाव की सूचना से परिवार अपना बजट समझता है। इसलिए आर्थिक खबरों का अभाव पाठक को अपने दैनिक जीवन से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी से वंचित करता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर आर्थिक गतिविधियाँ समाज के हर वर्ग को प्रभावित करती हैं। महँगाई, रोजगार, कृषि, उद्योग, व्यापार, बजट और सरकारी नीतियों की खबरें नागरिकों को अपने जीवन से जुड़े निर्णय लेने में सहायता देती हैं। आर्थिक जगत की जानकारी के बिना पाठक देश की स्थिति और विकास को पूरी तरह नहीं समझ सकता। इसलिए ऐसी खबरों से रहित समाचार-पत्र अधूरा माना जाएगा।

चरण 4: निष्कर्ष आर्थिक समाचार जनजीवन और राष्ट्रीय विकास की जानकारी देते हैं; इसलिए वे समाचार-पत्र की संपूर्णता के लिए आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में महँगाई और रोजगार जैसे दैनिक जीवन के उदाहरणों को समाचार-पत्र की उपयोगिता से जोड़िए।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
'बात सीधी थी पर' शीर्षक कविता से ली गई पंक्ति 'भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई' – का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता सहज कथ्य और कृत्रिम भाषिक सजावट के बीच संबंध पर विचार करती है।
- सफल अभिव्यक्ति में भाषा भाव को स्पष्ट करती है; अनावश्यक शब्दाडंबर भाव को उलझाता है।

चरण 1: पंक्ति का प्रसंग समझिए कवि के पास कहने के लिए एक सरल और स्पष्ट बात थी। उसे अधिक प्रभावशाली बनाने की कोशिश

में वह भाषा को अनावश्यक रूप से जटिल बनाने लगा। यहाँ बात का टेढ़ा फँसना किसी वास्तविक वस्तु का मुड़ना नहीं, बल्कि आशय का उलझकर अस्पष्ट हो जाना है।

चरण 2: काव्य-संदेश पहचानिए कवि दिखाता है कि कथ्य के अनुरूप सहज भाषा की जगह चमत्कारपूर्ण शब्दों का आग्रह अभिव्यक्ति को नुकसान पहुँचाता है। शब्दों को बलपूर्वक साधने से बात की स्वाभाविकता खो जाती है। इसलिए आशय भाषा के विरोध में नहीं, भाषा के अनावश्यक आडंबर के विरोध में है। बात को बार-बार सुधारने और शब्दों को घुमाने का प्रयास भी उसकी स्पष्टता लौटा नहीं पाता। कविता रचनाकार को सावधान करती है कि अभिव्यक्ति की सफलता केवल शब्दों के कौशल में नहीं, भाव के सहज संप्रेषण में है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति का आशय है कि कवि की बात सरल थी, किंतु उसे प्रभावशाली बनाने के लिए भाषा को सजाने-सँवारने के प्रयास में वह उलझ गई। जटिल शब्दों और बनावटी अभिव्यक्ति के कारण मूल भाव की सहजता तथा स्पष्टता नष्ट हो गई। कवि कहना चाहता है कि भाषा कथ्य के अनुकूल, स्वाभाविक और सरल होनी चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष अनावश्यक भाषिक चमत्कार के कारण सीधा कथ्य उलझकर अपनी सहजता और स्पष्टता खो देता है।

त्वरित सुझाव: भाषा को दोष देने के बजाय उसके अनावश्यक सजावटी प्रयोग से कथ्य को हुई हानि स्पष्ट कीजिए।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में निहित व्यंग्यार्थ को स्पष्ट करके लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में सामाजिक संवेदना का दावा करने वाले प्रसारण-माध्यमों की संवेदनहीनता उजागर होती है।
- पीड़ा को मनोरंजन और प्रदर्शन में बदलना कविता के व्यंग्य का केंद्र है।

चरण 1: कार्यक्रम की स्थिति समझिए कविता में साक्षात्कारकर्ता शारीरिक रूप से असमर्थ व्यक्ति की वास्तविक परिस्थितियाँ समझने के बजाय उसकी पीड़ा को कैमरे के सामने उभारना चाहता है। उससे बार-बार दुखद प्रश्न पूछे जाते हैं ताकि वह रो पड़े और दर्शकों पर भावनात्मक प्रभाव पड़े। यह व्यवहार सहायता या सम्मान से प्रेरित नहीं है।

चरण 2: व्यंग्य का लक्ष्य पहचानिए व्यंग्य का निशाना उस व्यक्ति की शारीरिक असमर्थता नहीं है। निशाना वह मीडिया-तंत्र है जो सामाजिक सरोकार का दावा करते हुए मनुष्य को कार्यक्रम की सामग्री बना देता है। संचालक की कृत्रिम सहानुभूति और दर्शकों की भावनाओं का दोहन मानवीय गरिमा को चोट पहुँचाते हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कविता में दूरदर्शन की दिखावटी संवेदना पर व्यंग्य है। साक्षात्कारकर्ता अपाहिज व्यक्ति का दुख समझने के बजाय उसे रुलाकर कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाना चाहता है। उसकी पीड़ा दर्शकों के लिए तमाशा बन जाती है। सामाजिक सरोकार के नाम पर व्यक्ति की गरिमा की उपेक्षा करके दुख का प्रदर्शन करने वाली मीडिया की संवेदनहीनता को कवि ने उजागर किया है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता दुख को प्रदर्शन की वस्तु बनाने वाले मीडिया की कृत्रिम सहानुभूति और संवेदनहीनता पर व्यंग्य करती है।

त्वरित सुझाव: व्यंग्य का लक्ष्य अपाहिज व्यक्ति नहीं, उसकी पीड़ा को तमाशा बनाने वाली मीडिया-दृष्टि है; इसे स्पष्ट रखिए।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : 'छोटा मेरा खेत' कविता के आधार पर लिखिए कि काव्य-रचना की प्रक्रिया किन चरणों से होकर एक कृति के रूप में पूर्ण होती है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि कागज को खेत तथा भाव-विचार को बीज मानकर सृजन का रूपक प्रस्तुत करता है।
- कल्पना, शब्द और भावों का विकास मिलकर ऐसी कृति बनाते हैं जिसका रस बार-बार प्राप्त होता है।

चरण 1: सृजन का आरंभ पहचानिए कागज का पन्ना कवि का छोटा खेत है। किसी भावनात्मक आवेग के प्रभाव से मन में भाव या विचार का बीज पड़ता है। यह बीज रचना की शुरुआती प्रेरणा है। कवि इस प्रेरणा को अपनी कल्पना से पोषित करता है और उसे पाठक तक पहुँचाने योग्य रूप देता है। यहाँ खेती की क्रिया के माध्यम से कविता बनने की मानसिक प्रक्रिया को समझाया गया है।

चरण 2: विकास और पूर्णता का क्रम समझिए भाव का बीज कल्पना के रसायन से विकसित होता है। शब्दों के अंकुर निकलते हैं और भाव पुष्पित-पल्लवित होते हैं। इस प्रकार आरंभिक अनुभूति सुव्यवस्थित काव्य का रूप लेती है। पूर्ण कृति पाठकों को रस देती है; सामान्य फसल के विपरीत इसकी रस-धारा बार-बार ग्रहण करने पर भी समाप्त नहीं होती।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि कागज के पन्ने को खेत मानता है। भावनात्मक आवेग से उसमें विचार का बीज पड़ता है। कल्पना के रसायन से वह विकसित होकर शब्दों के अंकुर उत्पन्न करता है। भाव पुष्पित-पल्लवित होते हैं और रचना पूर्ण कृति बन जाती है। उसमें रस के फल लगते हैं, जिनका आनंद पाठक बार-बार लेते हैं; फिर भी उसका रस समाप्त नहीं होता।

चरण 4: निष्कर्ष भाव-विचार के बीज से कल्पना, शब्द और भाव-विकास के क्रम द्वारा अक्षय रस देने वाली काव्य-कृति बनती है।

त्वरित सुझाव: क्रम याद रखिए: कागज का खेत, भाव का बीज, कल्पना का रसायन, शब्दों के अंकुर और रस के फल।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : 'बगुलों के पंख' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि 'चुराए लिए जाती वे मेरी आँखें' से कवि क्या कहना चाहता है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्रकृति का दृश्य कवि की दृष्टि और मन को बाँध लेता है।
- काव्य-पंक्ति का आशय उसके दृश्य और कवि की अनुभूति को जोड़कर समझना चाहिए।

चरण 1: दृश्य का संदर्भ कवि आकाश में छाए काले बादलों के बीच उड़ते हुए सफेद बगुलों की पंक्ति देखता है। गहरी पृष्ठभूमि पर उजले पंखों का यह दृश्य अत्यंत सुंदर और सम्मोहक है। यहाँ आँखें चुराने का अर्थ कोई वस्तु चुराना नहीं, बल्कि दृष्टि को अपनी ओर खींच लेना है। कवि इस दृश्य को देखते रहना चाहता है। प्रकृति की सुंदरता इतनी प्रबल है कि उसकी दृष्टि पर जैसे उसका अपना नियंत्रण नहीं रहता। इस प्रकार पंक्ति में गहरी सौंदर्य-अनुभूति व्यक्त हुई है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर काले बादलों के बीच उड़ते सफेद बगुलों के पंखों की सुंदरता कवि को मुग्ध कर लेती है। उसकी आँखें अनायास उसी दृश्य पर टिक जाती हैं। वह चाहकर भी दृष्टि नहीं हटा पाता; इसी सम्मोहन को आँखें चुरा लेना कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति में बगुलों के सौंदर्य द्वारा कवि की दृष्टि और चेतना को बाँध लेने का भाव है।

त्वरित सुझाव: आँखें चुराने का शाब्दिक अर्थ न लिखें; काले बादलों और उजले पंखों के आकर्षक विरोध को जोड़ें।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'बादल राग' कविता में पूँजीपतियों की अट्टालिकाओं को 'आतंक भवन' क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बादल क्रांति और परिवर्तन के प्रतीक हैं।
- पूँजीपतियों का वैभव गरीबों के शोषण पर टिका है; इसलिए परिवर्तन उन्हें भयभीत करता है।

चरण 1: अट्टालिकाओं की प्रतीकात्मकता ऊँचे भवन धनिक वर्ग की संपन्नता और प्रभुत्व को प्रकट करते हैं। उनके भीतर संग्रहित धन गरीबों के शोषण से अर्जित हुआ है। ऐसे भवन सामान्य जन के लिए वैभव के साथ दमन और भय के भी प्रतीक बन जाते हैं। बादल की गर्जना इसी अन्यायपूर्ण व्यवस्था को चुनौती देती है। यहाँ भवनों की ऊँचाई मात्र की आलोचना नहीं है; उनके पीछे काम करने वाली असमानता और अन्याय की सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पूँजीपतियों की अट्टालिकाएँ गरीबों के शोषण से अर्जित संपत्ति और उनके दमनकारी प्रभुत्व की प्रतीक हैं। वहाँ रहने वाले धनिक क्रांति की गर्जना से काँपते हैं। शोषण से आतंक फैलाने और स्वयं क्रांति से आतंकित होने के कारण वे आतंक भवन हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अट्टालिकाएँ शोषण और आतंक पर आधारित पूँजीवादी व्यवस्था तथा उसके भीतर बसे भय को व्यक्त करती हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में गरीबों के शोषण और क्रांति से भयभीत पूँजीपति, दोनों पक्ष जोड़कर आतंक भवन का आशय खोलें।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास' – पतंग कविता से उद्धृत इस पंक्ति के संदर्भ में लिखिए कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बनता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कपास अपनी कोमलता और हल्केपन के कारण बाल-स्वभाव का बिंब बनती है।
- कविता में बच्चों की कल्पना, चंचलता और निर्भय उत्साह को प्रतीकात्मक भाषा में व्यक्त किया गया है।

चरण 1: कपास के बिंब को समझें कपास बच्चों के साथ सचमुच लाई हुई वस्तु नहीं है। उसका संबंध बच्चों के स्वभाव से है। जैसे कपास नरम और हल्की होती है, वैसे ही बच्चों के शरीर और मन में कोमलता तथा सहजता होती है। वे बड़ों की तरह चिंताओं और भय का भारी बोझ नहीं उठाते। बच्चों का कल्पनाशील मन उन्हें ऊँचाइयों की ओर खींचता है। कपास का हल्कापन इसी उड़ान, उमंग और बंधनरहित बाल-चेतना को मूर्त करता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कपास बच्चों की कोमलता, हल्केपन और लचीलेपन का प्रतीक है। बच्चों का तन-मन कपास जैसा मुलायम और निष्कपट होता है। वे भय और चिंताओं के बोझ से मुक्त होकर पतंग उड़ाने के रोमांच में डूबते हैं और गिरकर भी फिर उत्साह से उठते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कपास का संबंध बच्चों की जन्मजात कोमलता, सहज हल्केपन और खेल में प्रकट निर्भयता से है।

त्वरित सुझाव: कपास को केवल पतंग के धागे से न जोड़ें; उसके गुणों का बच्चों के तन-मन से संबंध स्पष्ट करें।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर लिखिए कि इन्दरसेना को लेखक 'मेढक-मंडली' क्यों कहता था ? जीजी के बार-बार कहने पर भी वह इन्दरसेना पर पानी फेंकने को राजी क्यों नहीं होता ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इन्दरसेना वर्षा की कामना में घूमने वाली बालकों की टोली है।
- लेखक की तर्कशील दृष्टि पानी की कमी में उसके अपव्यय का विरोध करती है।

चरण 1: मेढक-मंडली नाम का कारण इन्दरसेना के लड़के केवल लँगोटी पहनकर कीचड़ में लथपथ घूमते थे। वे उछलते-कूदते, शोर मचाते और वर्षा की पुकार लगाते हुए घरों से पानी माँगते थे। उनका रूप, उछलकूद और सामूहिक टेर लेखक को मेढकों की याद दिलाते थे; इसी उपमा से वह उन्हें मेढक-मंडली कहता था।

चरण 2: पानी फेंकने से असहमति लेखक इस विश्वास को स्वीकार नहीं कर पाता था कि टोली पर पानी डालने से इन्द्र वर्षा कर देंगे। सूखे में पीने के पानी का अभाव था और उसे दूर से लाना पड़ता था। ऐसे में इकट्ठा किया हुआ पानी गली में बहाना उसे अंधविश्वास तथा दुर्लभ साधन की बर्बादी लगता था। जीजी की श्रद्धा उसके तर्कशील विरोध को तत्काल दूर नहीं करती थी।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इन्दरसेना के लड़के लँगोटी पहनकर कीचड़ में लथपथ उछलते-कूदते और वर्षा के लिए टेर लगाते थे। उनकी आकृति और गतिविधियाँ मेढकों जैसी थीं, इसलिए लेखक उन्हें मेढक-मंडली कहता था। सूखे में पानी बड़ी कठिनाई से मिलता था। टोली पर पानी डालने से वर्षा होने का विश्वास उसे अंधविश्वास लगता था; वह बहुमूल्य पानी का अपव्यय नहीं करना चाहता था।

चरण 4: निष्कर्ष नामकरण का आधार लड़कों का मेढकों जैसा रूप-व्यवहार है; लेखक की असहमति का आधार अंधविश्वास का विरोध और पानी बचाने की चिंता है।

त्वरित सुझाव: दोनों प्रश्नों का पृथक उत्तर दें: पहले टोली का रूप-व्यवहार, फिर सूखे में पानी बहाने पर लेखक की आपत्ति।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'मैं जिंदगी में कभी चित नहीं हुआ' – पंक्ति में आए 'चित' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए, 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए कि लुट्टन ने इसका प्रयोग किस संदर्भ में किया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चित का शाब्दिक अर्थ पीठ के बल गिरना है। यहाँ कुश्ती की पराजय के साथ जीवन-संघर्ष का अर्थ भी जुड़ता है।
- पाठ के प्रसंग से अर्थ स्पष्ट करके संक्षिप्त, सुसंगत उत्तर लिखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और आशय लुट्टन ने मृत्यु के बाद अपने शरीर को पेट के बल लिटाने की बात कही थी। अपने बेटों की मृत्यु और महामारी की विपत्ति के बीच भी उसका स्वाभिमान बना रहा। उसके अंतिम निर्देश में अखाड़े के अपराजित पहलवान की पहचान दिखाई देती है।

चरण 2: उत्तर का आधार यह कथन केवल कुश्ती का दावा नहीं है। लुट्टन जीवन की विषम परिस्थितियों से अंत तक जूझता है। उसकी इच्छा है कि मरने के बाद भी उसे चित न लिटाया जाए और ढोलक बजाई जाए; इस प्रकार पराजय स्वीकार न करने का भाव उभरता है। ढोलक की ध्वनि उसके संघर्ष की साथी रही थी। इसीलिए अंतिम निर्देश में ढोलक बजाने की इच्छा भी उसके जीवन के उसी साहस से जुड़ती है। मृत्यु की अनिवार्यता के सामने वह अपने आत्मसम्मान को बचाए रखना चाहता है।

चरण 3: आदर्श उत्तर 'चित' का अर्थ पीठ के बल गिरना अर्थात कुश्ती में हारना है। लुट्टन ने मरने से पहले शिष्यों से कहा था कि उसकी लाश को चिता पर पेट के बल लिटाया जाए। वह जीवन में कभी चित नहीं हुआ था, इसलिए मृत्यु के बाद भी अपनी अपराजेय पहचान बनाए रखना चाहता था। यह कथन उसके जुझारूपन और स्वाभिमान को व्यक्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार पाठ का आशय है कि लुट्टन मृत्यु में भी पराजय की मुद्रा स्वीकार नहीं करना चाहता था।

त्वरित सुझाव: चित का अर्थ बताने के बाद अंतिम संस्कार के निर्देश से उसका संदर्भ जोड़िए।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'शिरीष के फूल' पाठ में बताया गया है कि कबीरदास को पंद्रह-बीस दिन का लहक उठना पसंद नहीं था। 'लहक उठना' का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखिए कि क्या आप भी इसमें विश्वास रखते हैं ? तर्क सहित उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- क्षणिक आवेश और स्थायी जीवन-मूल्य में अंतर करना इस प्रश्न का आधार है। कबीर की मस्ती बाहरी प्रदर्शन के बजाय सहज और निरंतर बने रहने वाली है।
- पाठ के प्रसंग से अर्थ स्पष्ट करके संक्षिप्त, सुसंगत उत्तर लिखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और आशय लहक उठना थोड़े समय के लिए उमंग, उत्साह अथवा आवेश में भर उठना है। पंद्रह-बीस दिन का संकेत उस उत्साह की अस्थिरता को स्पष्ट करता है। कबीर थोड़े समय की उछाल को पर्याप्त नहीं मानते; उनके फक्कड़ स्वभाव में स्थायित्व है।

चरण 2: उत्तर का आधार प्रश्न में अपना मत तर्क सहित देना है। समर्थन का आधार यह हो सकता है कि पढ़ाई, सेवा और कठिन काम में नियमित प्रयास ही परिणाम देता है। केवल कुछ दिनों की उत्तेजना शांत होते ही संकल्प छोड़ देना दृढ़ता का प्रमाण नहीं बनता। शिरीष की प्रतिकूल मौसम में भी बनी रहने वाली मस्ती इस विचार को समझने में सहायक है। बाहरी परिस्थिति के बदलते ही मन का उत्साह समाप्त हो जाए तो वह सहज, स्थायी स्वभाव नहीं माना जा सकता।

चरण 3: आदर्श उत्तर 'लहक उठना' का अर्थ थोड़े समय के लिए जोश या उत्साह से भर उठना है। कबीर ऐसी क्षणिक मस्ती के स्थान पर स्थायी फक्कड़पन और सहज आनंद चाहते थे। मैं भी उनके विचार से सहमत हूँ। कुछ दिनों का उत्साह कठिनाई आते ही समाप्त हो सकता है, जबकि निरंतर लगन और स्थिर मन से ही जीवन में सार्थक कार्य पूरे होते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार पाठ का आशय है कि क्षणिक उत्साह से अधिक मूल्य निरंतर लगन और सहज मस्ती का है।

त्वरित सुझाव: अर्थ, कबीर का दृष्टिकोण और अपने मत का कारण—इन तीन बातों को जोड़िए।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि आधुनिक समाज में कार्य कुशलता के लिए क्या आवश्यक है ? इसका आधार क्या होना चाहिए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कार्यकुशलता का संबंध व्यक्ति की रुचि और क्षमता के अनुकूल काम से है। जन्म से निर्धारित पेशा इन व्यक्तिगत विशेषताओं की उपेक्षा करता है।
- पाठ के प्रसंग से अर्थ स्पष्ट करके संक्षिप्त, सुसंगत उत्तर लिखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और आशय आधुनिक समाज में काम का विभाजन आवश्यक हो सकता है, पर श्रमिकों को जन्म के आधार पर स्थायी श्रेणियों में बाँटना उचित नहीं। व्यक्ति को ऐसा काम चुनने का अवसर मिलना चाहिए जिसमें उसकी रुचि हो और उसकी क्षमता का उपयोग हो सके।

चरण 2: उत्तर का आधार उपयुक्तता का मूल्यांकन शिक्षा, प्रशिक्षण, योग्यता और रुचि से होना चाहिए। बदलती परिस्थितियों में पेशा बदलने की स्वतंत्रता भी आवश्यक है। अरुचिकर काम जबरन करने पर व्यक्ति की दक्षता घटती है और समाज की उत्पादकता को भी हानि पहुँचती है।

चरण 3: आदर्श उत्तर आधुनिक समाज में कार्यकुशलता के लिए व्यक्ति को अपनी रुचि और क्षमता के अनुरूप व्यवसाय चुनने तथा आवश्यकता पर उसे बदलने की स्वतंत्रता चाहिए। श्रम-विभाजन का आधार जन्म या जाति नहीं, बल्कि योग्यता, प्रशिक्षण और व्यक्तिगत रुचि होनी चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार पाठ का आशय है कि कार्य का आधार व्यक्ति की योग्यता और रुचि होनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कार्य चुनने की स्वतंत्रता और योग्यता पर आधारित विभाजन दोनों स्पष्ट कीजिए।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' शीर्षक के आधार पर लिखिए कि आंबेडकर के अनुसार आदर्श समाज की स्थापना के लिए क्या किया जाना चाहिए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर की आदर्श सामाजिक व्यवस्था स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता पर आधारित है। सामाजिक संबंधों में इन मूल्यों का वास्तविक व्यवहार आवश्यक है।
- पाठ के प्रसंग से अर्थ स्पष्ट करके संक्षिप्त, सुसंगत उत्तर लिखना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और आशय आदर्श समाज में व्यक्तियों और समूहों के बीच संपर्क तथा विचारों का आदान-प्रदान खुला होना चाहिए। जाति की कठोर सीमाएँ इस संपर्क को रोकती हैं। इसलिए सामाजिक अवरोध हटाकर सभी की सहभागिता और एक-दूसरे के प्रति सम्मान बढ़ाना आवश्यक है।

चरण 2: उत्तर का आधार भ्रातृता का अर्थ केवल नारा नहीं, बल्कि साथ मिलकर जीने की भावना है। स्वतंत्रता अवसर देती है और समता भेदभाव घटाती है। इन मूल्यों के साथ समाज में परिवर्तन तथा एक हिस्से के हित का दूसरे हिस्सों तक संचार संभव होता है।

चरण 3: आदर्श उत्तर आंबेडकर के अनुसार आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता पर आधारित होना चाहिए। जातिगत भेदभाव और सामाजिक अवरोध हटाकर सभी को समान अवसर देने चाहिए। विभिन्न वर्गों में मुक्त संपर्क, विचारों का आदान-प्रदान और परस्पर सहयोग बढ़ाकर ही ऐसी व्यवस्था बनाई जा सकती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार पाठ का आशय है कि आदर्श समाज के लिए समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे का व्यवहार आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: तीनों मूल्यों के नाम लिखकर सामाजिक संपर्क और भेदभाव दूर करने का उपाय जोड़िए।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
'बाजार दर्शन' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि बाजार जाते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का आकर्षण और विवेकपूर्ण खरीदारी।
- पाठ में बाज़ार का जादू मनुष्य की इच्छाओं को उकसाता है। उससे बचने का आधार अपनी वास्तविक आवश्यकता की स्पष्ट पहचान है।

चरण 1: ज़रूरत और मन की स्थिति पहचानें लेखक के अनुसार मन खाली हो तो बाज़ार की चमक-दमक उसे अनावश्यक वस्तुओं से भर सकती है। इसलिए खरीदने से पहले तय करना चाहिए कि हमें वास्तव में क्या चाहिए। केवल दूसरों को देखकर या आकर्षक प्रदर्शन से प्रभावित होकर वस्तु खरीदना उचित नहीं है।

चरण 2: संयम का उदाहरण समझें भगत जी अपनी ज़रूरत की वस्तु लेकर लौट आते हैं; बाज़ार की चकाचौंध उन्हें विचलित नहीं करती। उनका व्यवहार स्पष्ट करता है कि संतुष्ट मन, संयम और अपनी ज़रूरत का ज्ञान ग्राहक को बाज़ार के जादू से बचाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार जाते समय अपनी वास्तविक आवश्यकताएँ स्पष्ट रखनी चाहिए। मन खाली या असंतुष्ट न हो। चमक-दमक और

प्रलोभनों में पड़कर अनावश्यक वस्तुएँ न खरीदें। भगत जी की तरह संयमपूर्वक केवल ज़रूरत की वस्तुएँ खरीदनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में स्पष्ट आवश्यकता, भरा हुआ मन और संयम को जोड़ें; केवल खरीदारी की सूची बनाने तक बात सीमित न रखें।

14(क). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

यशोधर बाबू का बार-बार किशनदा को याद करना उनका सामर्थ्य कहा जाएगा या उनकी कमजोरी ? 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के संदर्भ में तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्मृति, जीवन-मूल्य और चरित्र का तर्कपूर्ण मूल्यांकन।
- यशोधर बाबू के लिए किशनदा आत्मीय मार्गदर्शक और पुराने जीवन-मूल्यों के प्रतिनिधि हैं। उनका स्मरण वर्तमान पारिवारिक असहजता के बीच सहारा बनता है।

चरण 1: स्मरण का सकारात्मक आधार पहचानें किशनदा ने यशोधर बाबू को स्नेह और मार्गदर्शन दिया था। इसलिए उन्हें बार-बार याद करना कृतज्ञता तथा आत्मीय संबंधों के प्रति निष्ठा का संकेत है। उनकी स्मृति से यशोधर बाबू अपने सादगीपूर्ण और नैतिक जीवन-मूल्यों को सँभालते हैं।

चरण 2: तर्क के साथ सीमा स्पष्ट करें नई पीढ़ी और बदलते पारिवारिक व्यवहार से असहज यशोधर बाबू पुराने अनुभवों में आश्रय खोजते हैं। इससे अनुकूलन की कठिनाई भी दिखाई देती है, किंतु स्मरण मात्र को कमजोरी कहना उचित नहीं। वह उन्हें आत्मबल देता है; कमजोरी तब होगी जब अतीत वर्तमान समझने में बाधा बने।

चरण 3: निष्कर्ष किशनदा को याद करना यशोधर बाबू का सामर्थ्य है। वे उनके स्नेह, मार्गदर्शन और सादगीपूर्ण जीवन-मूल्यों से आत्मबल पाते हैं। बदलते परिवार में यह स्मृति सहारा देती है। हालाँकि अतीत से अत्यधिक चिपके रहना नए परिवेश से सामंजस्य में बाधक हो सकता है।

त्वरित सुझाव: सामर्थ्य या कमजोरी का पक्ष स्पष्ट चुनें और उसे किशनदा के मार्गदर्शन तथा यशोधर बाबू की वर्तमान स्थिति से प्रमाणित करें।

14(ख). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'जूझ' कहानी के आधार पर दत्ताजी राव की किन्हीं दो चारित्रिक विशेषताओं को लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दत्ताजी राव की शिक्षा-समर्थक और प्रभावशाली भूमिका।
- चरित्र की विशेषता केवल विशेषण से नहीं, कथा में पात्र के कार्य से सिद्ध होती है। दत्ताजी राव की भूमिका आनंदा की पढ़ाई फिर शुरू कराने में निर्णायक है।

चरण 1: शिक्षा के प्रति संवेदनशीलता दिखाएँ दत्ताजी राव आनंदा की पढ़ने की इच्छा और उसकी कठिनाई को गंभीरता से लेते हैं। वे उसे केवल खेत के काम में लगाए रखने की स्थिति स्वीकार नहीं करते। पढ़ाई के लिए उनका हस्तक्षेप उनकी सहृदयता और शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टि प्रकट करता है।

चरण 2: प्रभावशाली और स्पष्टवादी व्यवहार समझें वे आनंदा के पिता को बुलाकर समझाते और फटकारते हैं तथा बालक को विद्यालय भेजने के लिए राज़ी करते हैं। उनका प्रभाव केवल कथन तक सीमित नहीं रहता; उससे आनंदा को पढ़ाई का अवसर मिलता है। इस प्रकार वे दृढ़, स्पष्टवादी और सहायता करने वाले व्यक्ति हैं।

चरण 3: निष्कर्ष दत्ताजी राव सहृदय और शिक्षा-समर्थक हैं; वे आनंदा की पढ़ने की इच्छा समझकर उसकी सहायता करते हैं। वे प्रभावशाली तथा स्पष्टवादी भी हैं। आनंदा के पिता को समझाकर और फटकारकर वे उसे विद्यालय भेजने के लिए राज़ी कर लेते हैं।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताओं के साथ एक-एक कथात्मक प्रमाण दें: पढ़ने की इच्छा समझना और पिता को विद्यालय भेजने के लिए राज़ी करना।

14(ग). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

मुअनजो-दड़ो की गृह-निर्माण योजना पर संक्षेप में प्रकाश डालिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुअनजो-दड़ो की योजनाबद्ध आवास-व्यवस्था।
- नगर की गृह-निर्माण योजना उसके नागरिक जीवन और स्वच्छता-बोध को व्यक्त करती है। पाठ में मकानों, गलियों और जल-निकासी का सुव्यवस्थित संबंध उभरता है।

चरण 1: मकानों की बनावट बताइए मुअनजो-दड़ो में पकी ईंटों से बने घर सुव्यवस्थित थे। कई घरों में आँगन और उसके चारों ओर कमरे थे। आँगन के माध्यम से प्रकाश और हवा का प्रबंध होता था। घरों के प्रवेश-द्वार प्रायः मुख्य सड़क की अपेक्षा गलियों की ओर खुलते थे।

चरण 2: सुविधा और स्वच्छता का संबंध समझें घरों में स्नानघर तथा जल-निकासी की व्यवस्था थी। घरेलू नालियाँ नगर की ढकी नालियों से जुड़ती थीं, जिससे गंदा पानी बाहर जा सके। इन विशेषताओं से पता चलता है कि निर्माण में केवल रहने की जगह नहीं, सुविधा, निजता और स्वच्छता का भी ध्यान रखा गया था।

चरण 3: निष्कर्ष मुअनजो-दड़ो के घर पकी ईंटों से योजनाबद्ध ढंग से बने थे। उनमें आँगन, कमरे और स्नानघर होते थे। दरवाज़े प्रायः गलियों में खुलते थे। घरों की नालियाँ ढकी नगर-नालियों से जुड़ी थीं। गृह-निर्माण में सुविधा और स्वच्छता का विशेष ध्यान था।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मकान की सामग्री, आँगन-कमरे और जल-निकासी शामिल करें; केवल नगर की सड़कों का वर्णन न करें।